हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार, 24 मई 2026

10 भीषण गर्मी में रात के बिजली कटों ने बढ़ाई मुसीबत...

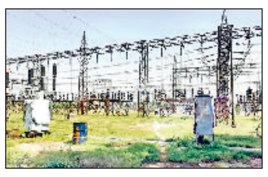

12 शहर में बंदरों का आतंक, झुंड ने घर में घुसकर व्यक्ति को काटा

RAO SULTAN SINGH MEMORIAL SR. SEC. SCHOOL, NIMBHERA

AFFILIATED TO CBSE, NEW DELHI AFF. NO. 532239

Our Shining Stars Class 10th (2025-26)

X Subject Wise - 100 Marks

Sanskrit - 29
SST - 10
Math - 03
Science - 03

Our Shining Stars Class 12th (2025-26)

XII Subject Wise - 100 Marks

Math - 02
Eng. - 03
Geo.- 04
San.- 02

Foundation Course Starts From:
Class 6th to 9th
(Sarthi Kota)

किड्स प्ले स्कूल

ADMISSION OPEN

Dir.: Adv. Satpal Yadav M.9050361061 Principal: Rajkumar Sharma M. 9416420180
Vice Principal: Ram Kumar Yogi M. 9671390638

खबर संक्षेप

'अरावली की पुकार' पुस्तक में शामिल की गई डॉ. तंवर की कविताएं

नारनौल। राज्य शिक्षक पुरस्कार से विभूषित वरिष्ठ साहित्यकार एवं सेवानिवृत्त खंड शिक्षा अधिकारी डॉ. मक्खन लाल तंवर की तीन कविताएं 'अरावली की पुकार 'नामक काव्य संकलन में सम्मिलित की गई हैं। इस संकलन में देश के सत्रह चुनिंदा कवि एवं साहित्यकारों की कविताएं शामिल की गई हैं। अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध कवि डॉ. विवेक बादल बाजपुरी के संपादन में इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ है। माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा अरावली पर्वत श्रृंखला को लेकर दिए गए सुझाव एवं व्याख्या तथा निर्णय के बाद से कवियों एवं साहित्यकारों का ध्यान इस तरफ गया और उनकी भावनाओं और संस्कारों ने इस पुस्तक का रूप धारण कर लिया।

खड़खड़ी स्कूल में की स्टेशनरी वितरित

नारनौल। रोटरी क्लब बेलाज एवं रोटरी क्लब सिटी के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को मोहल्ला खड़खड़ी स्थित राजकीय विद्यालय में स्टेशनरी वितरण परियोजना का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्कूल के जरूरतमंद विद्यार्थियों को कॉपी, पेंसिल, पेन, रबर, शॉर्पनर सहित अन्य शिक्षण सामग्री वितरित की गई। जिससे सैकड़ों बच्चे लाभान्वित हुए।

पटीकरा में हुई लिंगानुपात रोकने के लिए बैठक

नारनौल। गांव पटीकरा में मंढाणा चिकित्सा अधिकारी डॉ. विकास यादव की अध्यक्षता में लिंगानुपात सुधार हेतु विशेष जागरूकता मीटिंग का आयोजन किया गया। जिसमें गिरते लिंगानुपात पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए ग्रामीणों को जागरूक किया गया। बैठक में मुख्य रूप से सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी दीपक शर्मा, सुमन कुमारी, शर्मिला व विजय कुमार सहित सभी स्थानीय आशा वर्कर व आंगनबाड़ी वर्कर उपस्थित रही। चिकित्सा अधिकारी डॉ. विकास यादव ने समाज में गिरते लिंगानुपात को एक बहुत बड़ा खतरा बताया।

राजकीय विद्यालय में बच्चों को किया सम्मानित

महेंद्रगढ़। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बेरी में बोर्ड परीक्षा का परिणाम शत प्रतिशत रहा। विद्यालय प्राचार्य आनंदपाल ने बताया कि कक्षा 12वीं में 34 विद्यार्थियों में से 15 विद्यार्थियों ने मेरिट प्राप्त की है। कक्षा 12वीं में साक्षी शर्मा ने 500 में से 476 अंक हासिल कर विद्यालय में प्रथम स्थान हासिल किया है। इसके अलावा सुनीता यादव ने 472 अंक लेकर दूसरा स्थान हासिल किया।

आरआरसीएम स्कूल में हुई नारा लेखन स्पर्धा

कनीना। आरआरसीएम स्कूल में शनिवार को नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आरआरसीएम ग्रुप चेयरमैन राव रोशनलाल ने बताया कि यह प्रतियोगिता तीन विभागों में आयोजित की गई, जिसमें पहले ग्रुप में कक्षा आठवीं से मानवी शिवालिक सदन से प्रथम स्थान पर रही। कक्षा छठी से अंशिका हिमालय सदन से दूसरे स्थान पर रही। कक्षा आठवीं से देविका नीलगिरि सदन से तीसरे स्थान पर रही।

आधी रात को गुल हो रही बिजली, गर्मी व मच्छरों ने बिगाड़ा जनजीवन

भीषण गर्मी में रात के बिजली कटों ने बढ़ाई मुसीबत, लोग परेशान

खास बातें

- गांवों में हालात और भी खराब, रात में तीन-चार बार कट रही सप्लाई
- पेयजल व्यवस्था भी प्रभावित, मरीजों और बुजुर्गों की बढ़ी परेशानी

नारनौल का पॉवर हाउस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

ग्रामीण ही नहीं, शहरी क्षेत्र में भी इन दिनों भीषण गर्मी के बीच लगातार लग रहे बिजली पावर कट आमजन की परेशानी का बड़ा कारण बन गए हैं। दिन का तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच रहा है, जबकि रात को भी पारा 30 डिग्री से ऊपर बना हुआ है। हालात यह हैं कि रात के समय भी गर्म हवाएं चल रही हैं और ऐसे में बिजली कट लोगों के लिए बड़ी मुसीबत बनते जा रहे हैं।

शहरवासियों के अनुसार पिछले कई दिनों से रोजाना मध्य रात्रि करीब डेढ़ बजे बिजली आपूर्ति बाधित हो जाती है। कभी आधे घंटे तो कभी एक से डेढ़ घंटे तक बिजली गुल रहती है। गर्मी और उमस के कारण लोग घरों में बैठ नहीं पाते। बिजली जाते ही पंखे और कूलर बंद हो जाते हैं, जिससे घरों में घुटन भरा माहौल बन जाता है। लोगों का कहना है कि यदि दरवाजे और खिड़कियां खोलते हैं तो मच्छरों का आतंक परेशान कर देता है और यदि बंद रखें तो गर्मी बेहाल कर देती है। ऐसे में रातभर लोगों की नींद खराब हो रही है। बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों की स्थिति सबसे ज्यादा खराब बनी हुई है। कई घरों में लोग हाथ से पंखा चलाकर रात काटने को मजबूर हैं। गौर करने की बात यह है कि जिन घरों इन्वेटर बैटरी या सोलर सिस्टम नहीं है, उन गरीबों को ज्यादा परेशानी हो रही है। भारी गर्मी के कारण बिजली कटने से न रात को ठीक से नींद आ पा रही है और न ही दिन की झुलसा देने वाली गर्मी में चैन पड़ रहा है।

छोटे बच्चे और मरीज पूरी रात परेशान

शहर के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी बिजली संकट गहराता जा रहा है। ग्रामीणों के अनुसार गांवों में रात के समय दो से तीन नहीं, बल्कि कई जगह तीन से चार बार तक बिजली कट लग रहे हैं। ग्रामीण इलाकों में बिजली कटने के बाद हालात और अधिक खराब हो जाते हैं, क्योंकि वहां गर्मी का असर ज्यादा महसूस होता है। बुजुर्ग, महिलाएं, छोटे बच्चे और मरीज पूरी रात परेशान रहते हैं।

पेयजल पर भी पड़ रहा बिजली कटने का असर

सुबह के समय बिजली कटने का असर पेयजल व्यवस्था पर भी पड़ रहा है। पानी की मोटरें नहीं चल पाने से लोगों को पानी भरने में परेशानी उठानी पड़ रही है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में सुबह पानी की किल्लत लोगों की चिंता बढ़ा रही है। हालांकि लोगों का कहना है कि गर्मी के इस दौर में लगातार बिजली कट से आमजन का जीवन प्रभावित हो रहा है। लोगों ने बिजली विभाग से रात के समय लगने वाले कटों को कम करने तथा स्थायी समाधान निकालने की मांग की है, ताकि भीषण गर्मी में लोगों को राहत मिल सके।

यह बोले एसडीओ

इस संबंध में सिटी एसडीओ मोहम्मद अजहरुद्दीन ने स्वीकार किया कि पिछले कुछ दिनों से रात के समय पावर कट लगाए जा रहे हैं। ये कट आगे से लगाए जा रहे हैं और लोगों को धैर्य व शांति बनाए रखनी होगी। विभाग स्थिति को सामान्य करने का प्रयास कर रहा है।

तकनीकी खराबी के नाम पर बिजली बाधित

कई बार दिन के समय भी अचानक पावर कट लग जाते हैं। इसके अलावा बिजली लाइनों में फाल्ट, तकनीकी खराबी तथा मरम्मत कार्य के नाम पर भी बिजली सप्लाई बाधित रहती है। लोगों का कहना है कि बार-बार बिजली कटने से इनवर्टर भी जवाब देने लगे हैं और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के खराब होने का खतरा बढ़ गया है।

राता कलां में बिजली कटौती से लोग परेशान, सप्लाई बहाली की मांग

मंडी अटेली। अटेली क्षेत्र के गांव राता कलां में बिजली कटौती की समस्या से ग्रामीणों और किसानों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। गांव में बिजली सप्लाई एग्रीकल्चर फीडर एवं रूरल एरिया को दो अलग-अलग शेड्यूल में दी जा रही है, जिससे लोगों की दिनचर्या प्रभावित हो रही है। गांव के किसान भरपूर सिंह ने बताया कि दिन का शेड्यूल सुबह साढ़े बजे से सायं साढ़े छह बजे तक रहता है, जबकि रात्रि का शेड्यूल दो बजे से सुबह साढ़े 10 बजे तक है। इस व्यवस्था के चलते विशेष रूप से खेतों में रहने वाले किसानों को काफी दिक्कतें उठानी पड़ रही हैं। ग्रामीणों ने बताया कि जब तीन दिन तक बिजली दिन के शेड्यूल के अनुसार आती है तो रात्रि के समय करीब 12 बजे पेट ट्रांसफार्म की लाइन भी बंद कर दी जाती है। इससे घरों में अंधेरा छा जाता है और लोगों को भीषण गर्मी में सोने में भारी परेशानी होती है। इनवर्टर भी सीमित समय तक ही कूलर और पंखों को चला पाते हैं जिसके बाद पूरी रात लोग गर्मी और मच्छरों से परेशान रहते हैं। ग्रामीणों का कहना है कि छोटे बच्चों और बुजुर्गों को इस स्थिति में सबसे ज्यादा दिक्कत होती है। ऐसे में उन्होंने बिजली विभाग से मांग की है कि जब कृषि लाइन की सप्लाई रात में बंद रहती है, उस समय पेट ट्रांसफार्म की सिंगल फेस सप्लाई पूरी रात चालू रखी जाए, ताकि लोगों को राहत मिल सके। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द समस्या का समाधान नहीं किया गया तो वे आंदोलन का रास्ता अपनाने को मजबूर होंगे।

यह बोले एसडीओ

इस बारे में बिजली विभाग के एसडीओ दीपक कुमार ने बताया कि ट्यूबवेल की लाइनों को तीन ग्रुप में विभाजित किया गया है और प्रत्येक ग्रुप को आठ-आठ घंटे बिजली सप्लाई दी जाती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि शेड्यूल में बदलाव किया गया तो कुछ उपभोक्ताओं को नुकसान हो सकता है इसलिए फिलहाल शेड्यूल को रिवाइज करना संभव नहीं है।

बुचौली में साइलेंट किलर हाइपरटेंशन जांच और जागरूकता शिविर लगाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। ग्रामीणों को जागरूक करते हुए। फोटो : हरिभूमि

विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को उप स्वास्थ्य केंद्र बुचौली में विशेष हाइपरटेंशन जांच व जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में ग्रामीणों को साइलेंट किलर कहे जाने वाले उच्च रक्तचाप के प्रति जागरूक किया गया। स्वास्थ्यकर्मी मुकेश चौहान, रेणु कुमारी व सोनू की टीम ने सुबह नौ बजे से शिविर शुरू किया। 30 वर्ष से अधिक उम्र के 87 ग्रामीणों की ब्लड प्रेशर जांच की गई, जिनमें से 19 लोगों में बीपी सामान्य से अधिक पाया गया। उन्हें तुरंत निःशुल्क दवा शुरू कर नियमित फॉलोअप की सलाह दी गई। उन्होंने बताया कि हाइपरटेंशन के शुरू में कोई लक्षण नहीं दिखते, इसलिए यह साइलेंट किलर है। 30 मिनट तेज चलना बीपी की सबसे अच्छी दवा है। स्वास्थ्यकर्मी मुकेश चौहान ने सभी को नमक कम, जीवन ज्यादा का नारा देकर शपथ दिलाई। ग्रामीणों ने तनाव मुक्त जीवन, योग व हरी सब्जी खाने का संकल्प लिया। मौके पर पूर्व सरपंच राजबीर सिंह, शेर सिंह, मुकेश मिस्त्री, रतिराम, आंगनबाड़ी वर्कर पुष्पा देवी, राजबाला, हैल्पर शारदा, प्रेम, शर्मिला आदि मौजूद रही।

रास्ता भटके बच्चों को परिजनों से मिलवाया

महेंद्रगढ़। जिला पुलिस ने अपनी तत्परता का उदाहरण पेश करते हुए, रास्ता भटके दो नाबालिग बच्चों को मात्र तीन घंटे के भीतर उनके परिजनों से सुरक्षित मिलवा दिया। शुक्रवार शाम स्थानीय लोगों ने डायल 112 पर सूचना दी थी कि दो बच्चे लावारिस हालत में शहर क्षेत्र में घूम रहे हैं। इस सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम तुरंत मौके पर पहुंची और बच्चों को सुरक्षित अपनी देखरेख में लेकर थाने आ गई। इसके बाद पुलिस टीम ने बिना समय गंवाए बच्चों के परिजनों की तलाश शुरू कर दी। आसपास के क्षेत्र में पूछताछ और त्वरित जांच के बाद पुलिस को सफलता मिली। बच्चे खेलते-खेलते अपने घर से काफी दूर निकल आए थे और रास्ता भटक गए थे।

भागवत में हुई राजा परीक्षित की कथा और शुखदेव का प्राकट्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। कथा के दौरान रसपान करते कथावाचक। फोटो : हरिभूमि

शहर के रेलवे रोड स्थित मास्टर कॉलोनी के किशोरी कुंज में कौशल्या देवी शिव मंदिर ट्रस्ट एवं कॉलोनी के सभी भक्तों की ओर से चल रहीं श्रीमद् भागवत सप्ताह ज्ञानोत्सव के दौरान कथा व्यास अक्षय कृष्ण ठाकुर महाराज के द्वारा भागवत कथा में देव ऋषि नारद का पूजन, राजा परीक्षित द्वारा शमीक ऋषि का अपमान, श्रृंगीऋषि द्वारा परीक्षित को श्राप, परीक्षित का प्रायश्चित एवं सुखदेव के प्राकट्य का वर्णन किया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य यजमान मामन चौधरी एवं आशा गर्ग सपरिवार थे, जबकि अन्य यजमान रमेश शर्मा एवं ऊषा शर्मा भी सपरिवार वहां पहुंचे। व्यास पूजा का कार्य पंडित रामनिवास शास्त्री ने विधिवत मंत्रोच्चार से करवाया। कथा वाचक ने बताया कि एकबार राजा परीक्षित ने गलती से शमीक ऋषि के गले में मरा हुआ सांप डाल दिया।

यह देखकर ऋषि के पुत्र श्रृंगी ने परीक्षित को श्राप दे दिया कि आज से सातवें दिन तक्षक नाग के डसने से तुम्हारी मृत्यु होगी।

महेंद्रगढ़। ठंडाई पिलाते हुए। फोटो : हरिभूमि

शहीद भगत सिंह युवा संगठन ने लगाई छबील

महेंद्रगढ़। गांव बुचौली के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को शहीद भगत सिंह युवा संगठन जनकल्याण एवं जीवदया फाउंडेशन द्वारा भीषण गर्मी को देखते हुए विशेष ठंडाई की छबील लगाई गई। छबील में सैकड़ों छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, उप स्वास्थ्य केंद्र के स्वास्थ्य कर्मचारियों और राहगीरों को ठंडी-मीठी ठंडाई पिलाकर जल सेवा की गई। विद्यालय परिसर में पहुंचने पर प्रधानाचार्य धर्मवीर सिंह व समस्त स्टाफ ने संगठन के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों को फूल मालाएं पहनाकर और स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मान किया। प्रधानाचार्य धर्मवीर सिंह व समाजसेवी मुकेश चौहान ने कहा कि इतनी भीषण गर्मी में बच्चों और स्टाफ के लिए इस तरह की ठंडी छबील लगाना बेहद पुण्य का काम है। उन्होंने युवाओं की सेवा भावना की सराहना करते हुए कहा कि संगठन जन कल्याण के साथ जीवदया के क्षेत्र में भी जिला महेंद्रगढ़ में सराहनीय कार्य कर रहा है। संगठन के मुख्य संचालक विकास शर्मा बुचौली ने बताया कि फाउंडेशन का उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति की मदद व मूक पशु-पक्षियों की सेवा करना है।

नशे के खिलाफ किया जागरूक

- छात्र-छात्राओं को उनके अधिकारों, सुरक्षा उपायों व नशे के खिलाफ जागरूक करना उद्देश्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। बच्चों को जागरूक करते हुए। फोटो : हरिभूमि

महिला सुरक्षा जागरूकता टीम द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय रिवासा में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूली छात्र-छात्राओं को उनके अधिकारों, सुरक्षा उपायों और नशे के खिलाफ जागरूक करना था। कार्यक्रम की शुरुआत में निरीक्षक शारदा और उनकी टीम ने छात्राओं को उनके कानूनी अधिकारों से अवगत कराया और महिला विरुद्ध होने वाले अपराध, पोक्सो एक्ट तथा आज के समय में साइबर फ्रॉड के बारे में विस्तार से जानकारी दी। छात्राओं को आपातकालीन नंबर डायल 112 और ट्रिप मॉनिटरिंग सेवा के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। टीम ने बताया कि किसी भी विषम परिस्थिति या असुरक्षित महसूस होने पर महिलाएं और छात्राएं डायल 112 पर कॉल करके इस सेवा का लाभ उठा सकती हैं। इस सेवा के अंतर्गत, जब तक महिला सुरक्षित अपने गंतव्य स्थान तक नहीं पहुंच जाती, तब तक पुलिस द्वारा उसके फोन को ट्रैक करके सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। छात्राओं का मनोबल बढ़ाते हुए पुलिस टीम ने कहा कि पुलिस आप लोगों की मित्र है।

शिक्षा सामग्री वितरण से बच्चों में बढ़ा उत्साह

नारनौल। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा को बढ़ावा देने व जरूरतमंद बच्चों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से युवा साथी ग्रुप हरियाणा एवं उड़ान जनसेवा ट्रस्ट ढाणी बाठोठा की ओर से ढाणी बाठोठा में स्कूली बच्चों को शिक्षा सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक करना और उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित करना रहा। इस अवसर पर स्कूल मुखिया बिरेंद्र सिंह, बिक्रम सिंह, कैलाश चंद, संस्था के सदस्य रविन्द्र शर्मा उपस्थित रहे। सभी ने बच्चों को मेहनत और लगन के साथ पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। संस्था के सदस्य रविन्द्र शर्मा ने कहा हर बच्चे तक शिक्षा की रोशनी पहुंचाना हम सभी की जिम्मेदारी है।

नारनौल। बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

हाईटेंशन लाइन मुआवजा नीति में बदलाव के विरोध में प्रदर्शन कल

- किसान जिला सचिवालय नारनौल में जताएंगे आक्रोश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

प्रदेश सरकार द्वारा हाईटेंशन बिजली लाइनों के मुआवजे से संबंधित नीति में किए गए नए संशोधन के विरोध में जिले के किसान 25 मई को जिला सचिवालय नारनौल में रोष प्रदर्शन करेंगे। यह प्रदर्शन भारतीय किसान कामगार अधिकार मोर्चा के नेतृत्व में सुबह 10:30 बजे आयोजित किया जाएगा।

भारतीय किसान कामगार अधिकार मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष सतेंद्र लोहचब, मनोज गुढ़ा आदि किसानों का आरोप है कि सरकार ने गत 29 अप्रैल को मुआवजा नीति में किसान विरोधी संशोधन कर उनकी जमीन के वास्तविक बाजार मूल्य को प्रभावित करने का प्रयास किया है। किसान प्रतिनिधियों ने बताया कि हाईटेंशन लाइनों के खिलाफ लगभग दो वर्षों तक चले आंदोलन के बाद भारत सरकार ने 21 मार्च 2025 को मुआवजा नीति लागू की थी, जिसे हरियाणा सरकार ने 2 जून 2025 को प्रदेश में लागू कर दिया था। इसके बाद कई जिलों में किसानों को उनकी जमीन के मार्केट रेट के अनुसार मुआवजा मिलना शुरू हो गया था। किसान नेताओं का कहना है कि खेतों से गुजरने वाली हाईटेंशन लाइनों के कारण जमीन की कीमत में होने वाले नुकसान की भरपाई इस नीति से संभव हो रही थी। किसानों के अनुसार नए प्रावधान के तहत मुआवजे के लिए मार्केट रेट का निर्धारण लॉटरी सिस्टम से किया जाएगा, जो पूरी तरह अनुचित है।

प्रदेश के कॉलेजों में यूजी दाखिलों के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन शुरू

उच्चत्तर शिक्षा विभाग ने केंद्रीकृत ऑनलाइन एडमिशन पोर्टल खोला

तीन चरणों में होगी एडमिशन प्रक्रिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

नारनौल। पीजी कॉलेज का प्रवेश द्वार। फोटो : हरिभूमि

प्रदेश के सरकारी, एडिड और सेल्फ फाइनेंस कॉलेजों में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए स्नातक (यूजी) पाठ्यक्रमों में दाखिले की प्रक्रिया शुरू हो गई है। उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार विद्यार्थियों के लिए केंद्रीकृत ऑनलाइन एडमिशन पोर्टल खोल दिया गया है। सभी इच्छुक विद्यार्थियों के लिए पोर्टल पर पंजीकरण अनिवार्य किया गया है। बिना रजिस्ट्रेशन किसी भी छात्र को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। विभाग के अनुसार दाखिले तीन चरणों में किए जाएंगे। पहले चरण में प्रथम मेरिट सूची, दूसरे चरण में दूसरी मेरिट सूची और तीसरे चरण में फिजिकल काउंसलिंग के माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया पूरी होगी। मेरिट सूची विद्यार्थियों के बेस्ट पांच विषयों के अंकों, वेटेज तथा राज्य आरक्षण नीति के आधार पर तैयार की जाएगी।

ऑनलाइन पंजीकरण के दौरान सभी विद्यार्थियों से 100 रुपये गैर-वापसी योग्य रजिस्ट्रेशन फीस ली जाएगी। वहीं फिजिकल काउंसलिंग के दौरान विलंब शुल्क भी लागू रहेगा। पहले सप्ताह में 100 रुपये लेट फीस तथा उसके बाद प्रतिदिन अतिरिक्त शुल्क देना होगा।

यह बोले नोडल अफसर

पीजी कॉलेज के एडमिशन नोडल अफसर डा. सतीश सैनी ने बताया कि विभाग की ओर से जारी आदेशों में स्पष्ट किया गया है कि सभी दाखिले नई शिक्षा नीति-2020 (एनईपी-2020) के तहत किए जाएंगे। हरियाणा के विद्यार्थियों के लिए परिवार पहचान पत्र (पीपीपी) अनिवार्य रहेगा तथा आय संबंधी जानकारी भी परिवार पहचान पत्र से ही ली जाएगी। इसके अलावा सभी विद्यार्थियों को एंटी रैगिंग अंडरटेकिंग ऑनलाइन पोर्टल से भरकर अपलोड करनी होगी। दाखिले से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए विद्यार्थी टोल फ्री नंबर 1800-180-2133 या विभाग की हेल्पडेस्क ईमेल पर संपर्क कर सकते हैं।

छात्राओं की ट्यूशन फीस नहीं लगेगी

उच्चतर शिक्षा विभाग ने छात्राओं को बड़ी राहत देते हुए सभी गर्ल स्टूडेंट्स की ट्यूशन फीस शून्य रखी है। सरकारी कॉलेजों में प्रदेश के एससी विद्यार्थियों की ट्यूशन फीस भी माफ रहेगी। एडिड और सेल्फ फाइनेंस कॉलेजों में पात्र एससी विद्यार्थियों से प्रारंभिक प्रवेश के समय कोई फीस नहीं ली जाएगी। दस्तावेजों का ऑनलाइन सत्यापन संबंधित कॉलेजों द्वारा मेरिट सूची जारी होने से पहले किया जाएगा। केवल उन्हीं विद्यार्थियों को मेरिट सूची में शामिल किया जाएगा जिनके दस्तावेज सत्यापित होंगे। फिजिकल काउंसलिंग के दौरान दस्तावेजों की भौतिक जांच भी की जाएगी।

खबर संक्षेप

बीएनडी स्कूल में हुआ मैंगो-डे प्रतियोगिता

महेंद्रगढ़। बीएनडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल खातौदड़ा में स्वास्थ्यवर्धक टिफिन पर फायरलेस कुकिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम का संचालन किड्जी हेड मंजू यादव के निर्देशन में संपन्न हुआ। प्रतियोगिता में प्राइमरी कक्षा के नन्हे विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया। बच्चों ने बिना आग का प्रयोग किए भेलपुरी, स्प्राउट्स, सैंडविच, फ्रूट कस्टर्ड एवं फ्रूट चार्ट जैसे पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक व्यंजन तैयार किए। विद्यार्थियों की रचनात्मकता और आकर्षक प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया। इसके साथ ही विद्यालय में मैंगो डेह का भी रंगारंग आयोजन किया गया। इस दौरान बच्चे पीले रंग की आकर्षक वेशभूषा में विद्यालय पहुंचे और आम से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लिया।

अदम्य खैरवाल ने राइफल शूटिंग में किया कमाल

महेंद्रगढ़। कनीना निवासी एवं ओडियम इंटरनेशनल स्कूल के 14 वर्षीय छात्र अदम्य खैरवाल ने देहरादून में 16 मई को आयोजित 10 मीटर राइफल शूटिंग प्री-नेशनल प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर 400 में से 389.1 अंक प्राप्त कर प्री-नेशनल के लिए क्वालिफाई किया। इतनी कम उम्र में अदम्य खैरवाल की यह उपलब्धि पूरे महेंद्रगढ़ जिले के लिए गर्व का विषय बन गई है। अब वह जल्द ही राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में अपना दम दिखाएंगे। तकनीक और शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अदम्य खैरवाल लगातार नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं।

श्री अनाथ गोशाला में 160 क्विंटल तूड़ा किया दान

नारनौल। गोसेवा मंडल के सानिध्य में श्री अनाथ गौशाला में सेवा व समर्पण का एक सराहनीय कार्य किया गया। स्वर्गीय गुलजारीलाल व स्वर्गीय लक्ष्मीबाई की पुण्य स्मृति में उनके पड़पोत्र युग अग्रवाल ने गोशाला में लगभग 160 क्विंटल तूड़ा दान किया गया, जिससे गोमाताओं के चारे की व्यवस्था में महत्वपूर्ण सहयोग मिलेगा। इस अवसर पर दादा मुकेश अग्रवाल, दादी शारदा देवी व पिता नितिन अग्रवाल के अलावा गोशाला के प्रधान उज्जनपाल, गोसेवा मंडल प्रधान सतपाल यादव, संस्थापक मुकेश वालिया, गजेंद्र नंबरदार व सुरेंद्र मुनीम मौजूद रहे।

डॉ. सुकेश दीवान को मातृ शोक

महेंद्रगढ़। श्री राम कॉलेज ऑफ इंस्टीट्यूशंस चेयरमैन डॉ. सुकेश दीवान की 96 वर्षीय माता शांति देवी का आकस्मिक निधन हो गया हैं। उनकी शव यात्रा उनके निवास स्थान दीवान कॉलोनी फार्म हाउस से मोदा आश्रम में दाह संस्कार किया गया। उनके शव यात्रा बैकुंठी बैंड-बाजे से निकाली गई। दाह संस्कार के समय प्रोफेसर रामबिलास शर्मा के छोटे भाई राजू, गौड़ ब्राह्मण सभा प्रधान राकेश मेहता, ब्राह्मण सभा प्रधान दिनेश वैध, मौदा आश्रम प्रधान सुधीर दीवान, धौलपोश गौशाला प्रधान रविंद्र तिवारी, एसबीबीडी के अध्यक्ष सुरेश शर्मा, वीएचपी प्रखंड अध्यक्ष रमेश वर्मा, शिक्षाविद्व मुकेश लावनिया शामिल रहें।

अटेली मोड़ के पास लगाई छबील

कनीना। ज्येष्ठ माह की भीषण गर्मी व तपती धूप से राहत देने के लिए शनिवार को कनीना महेंद्रगढ़ सड़क मार्ग पर अटेली मोड़ के समीप छबील का आयोजन किया गया। इस दौरान राहगीरों, वाहन चालकों व स्थानीय निवासियों को रोककर ठंडा व मीठा जल पिलाया गया। राहगीरों ने भी इस चिलचिलाती धूप में मीठा पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई और इस पुनीत कार्य की सराहना की। इस मौके पर झाडली निवासी राधेश्याम शर्मा, शक्ति सिंह निमोठ, वेदप्रकाश शर्मा, बबलू गुप्ता, संजय कुमार मित्तल, अशोक कुमार ने कहा कि गर्मी के मौसम में जीव जंतुओं व मनुष्यों के लिए पेयजल की व्यवस्था करना ही सच्ची सेवा है।

पूल पार्टी के साथ हुई गर्मी की छुट्टियों की शुरुआत

महेंद्रगढ़। बीआर आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सेहलंग में ग्रीष्मकालीन अवकाश की शुरुआत बड़े ही उत्साह एवं आनंदपूर्ण वातावरण में पूल पार्टी के साथ की गई। विद्यालय परिसर में आयोजित इस विशेष कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने पानी में डांस कर खूब आनंद लिया तथा विभिन्न वाटर एक्टिविटीज में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय परिसर बच्चों की खुशियों एवं उत्साह से सराबोर दिखाई दिया। विद्यार्थियों ने अपने मित्रों एवं शिक्षकों के साथ यादगार पल बिताए। प्राचार्या ज्योति भारद्वाज ने कहा कि विद्यालय का उद्देश्य बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ तनावमुक्त एवं आनंदमय वातावरण प्रदान करना है, ताकि बच्चे मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहकर नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ सकें। चेयरमैन हरीश भारद्वाज ने कहा कि गर्मी की छुट्टियां केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि स्वयं को और बेहतर बनाने का अवसर भी होती हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को हॉलिडे होमवर्क नियमित रूप से पूरा करने, प्रतिदिन कुछ समय पढ़ाई को देने, मोबाइल का सीमित उपयोग करने, सुबह जल्दी उठने, स्वास्थ्य का ध्यान रखने तथा माता-पिता का सम्मान करने के लिए प्रेरित किया।

नारनौल में अब पेट्रोल 100 रुपये व डीजल 92 रुपये के पार, नौ दिन में तीसरी बार बढ़े दाम

- बढ़ती कीमतों से महंगाई बढ़ने की आशंका

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

आम जनता को एक बार फिर महंगाई का झटका लगा है। तेल कंपनियों ने पेट्रोल व डीजल की कीमतों में लगातार तीसरी बार बढ़ोतरी कर दी है। ताजा वृद्धि के बाद नारनौल में पेट्रोल की कीमत 100 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92 रुपये प्रति लीटर के पार पहुंच गई है। ईंधन के दाम बढ़ने से अब परिवहन से लेकर रोजमर्रा की जरूरतों तक हर चीज महंगी होने की संभावना जताई जा रही है।

पेट्रोल 87 व डीजल 91 पैसे हुआ महंगा

कम्पनियों ने पेट्रोल पर 87 व डीजल पर 91 पैसे की बढ़ोतरी की है। इससे पहले मध्य-पूर्व में बढ़ते तनाव व ईरान-अमेरिका के बीच युद्ध जैसे हालात चलते तेल कम्पनियों ने 15 मई को पेट्रोल-डीजल पर प्रति लीटर तीन-तीन रुपये की बढ़ोतरी की थी। वहीं 18 मई को दोनों ईंधनों में लगभग 90 पैसे प्रति लीटर की वृद्धि दर्ज की गई है।

लगातार बढ़ती कीमतों से आम लोगों व वाहन चालकों की चिंता बढ़ गई है।

लगातार बढ़ रहे पेट्रोल-डीजल के दामों का असर बाजार में कुछ ही दिनों में दिखाई देने लगेगा। ट्रांसपोर्ट खर्च बढ़ने से फल, सब्जियां, दूध, राशन व निर्माण सामग्री जैसी आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में भी बढ़ोतरी हो सकती है। इसका सीधा असर आम लोगों के घरेलू बजट पर पड़ेगा। तेल कंपनियों का कहना है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी और लंबे समय तक दाम स्थिर रखने के कारण उन्हें भारी घाटा उठाना पड़ रहा था।

कंपनियों के अनुसार हर महीने करीब 30 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा था। इसी नुकसान की भरपाई के लिए कीमतों में इजाफा किया गया है। विशेषज्ञों के मुताबिक पेट्रोल और डीजल की मूल कीमत काफी कम होती है, लेकिन केंद्र व राज्य सरकारों की ओर से लगाए गए टैक्स, एक्साइज ड्यूटी, वैट और डीलर कमीशन के कारण इसकी कीमत कई गुना बढ़ जाती है।

आमजन ने जताई चिंता

वाहन चालकों, किसानों व व्यापारियों ने बढ़ती कीमतों पर चिंता जताई है। लोगों का कहना है कि पहले से बढ़ रही महंगाई के बीच ईंधन की कीमतों में लगातार इजाफा आम आदमी की कमर तोड़ रहा है। दूसरी ओर विपक्षी दलों ने भी सरकार से टैक्स में कटौती कर जनता को राहत देने की मांग की है। आम जनता अब उम्मीद कर रही है कि सरकार जल्द कोई ठोस कदम उठाकर पेट्रोल और डीजल की बढ़ती कीमतों पर लगाम लगाएगी, ताकि लोगों को राहत मिल सके।

ग्रामीणों ने सांसद का फूल-मालाओं के साथ किया स्वागत

सांसद ने किया 35 करोड़ के विकास कार्यों का उद्घाटन और शिलान्यास

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़–भिवानी लोकसभा सांसद चौधरी धर्मबीर ने अपने लोकसभा क्षेत्र के महेंद्रगढ़ विधानसभा के विभिन्न गांवों में करीब 35 करोड़ 65 लाख रुपये की लागत से होने वाले विकास कार्यों का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। इस दौरान क्षेत्र के लोगों में भारी उत्साह देखने को मिला और ग्रामीणों ने सांसद का स्वागत फूल-मालाओं के साथ किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पंचायत प्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता तथा स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे। सांसद ने जिन विकास कार्यों का शुभारंभ किया, उनमें ग्रामीण सड़क, सिंचाई प्रोजेक्ट, पंचायत के विभिन्न कार्य, पेयजल व्यवस्था को मजबूत करने, सामुदायिक भवनों के निर्माण जैसी परियोजनाएं शामिल हैं। इसके अलावा कुछ गांवों में खेल मैदानों और जिम की परियोजना शामिल हैं। सांसद चौधरी धर्मबीर ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार गांवों के समग्र विकास के लिए लगातार प्रयासरत हैं और ग्रामीण क्षेत्रों को शहरों जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराना उनकी प्राथमिकता है। विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि विकास कार्यों से क्षेत्र के लोगों को बेहतर मूलभूत सुविधाएं मिलेंगी और युवाओं को भी लाभ होगा। सांसद ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी परियोजनाओं को तय समय सीमा के भीतर गुणवत्ता के साथ पूरा किया जाए, ताकि जनता को जल्द लाभ मिल सके। उन्होंने यह भी कहा कि विकास कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस अवसर पर ग्रामीणों ने क्षेत्र में विकास कार्य शुरू होने पर खुशी जाहिर की और सांसद का आभार व्यक्त किया।

महेंद्रगढ़। गांव डेरोली जाट में विकास कार्यों का उद्घाटन करते सांसद धर्मबीर सिंह।

यह रहे मौजूद

इस मौके पर विधायक कंवर सिंह यादव, जिलाध्यक्ष यतेंद्र राव, जिला प्रमुख डा. राकेश कुमार, भाजपा जिला महामंत्री किशन लाल सैनी, दादरी एवं भिवानी कॉपरेटिव बैंक चेयरमैन सुधीर चांदवास, पंचायत समिति चेयरमैन विजय लक्ष्मी खोसया, सतनाली पंचायत समिति चेयरमैन अनिल, विकास एवं निगरानी समिति सदस्य संदीप मालड़ा, पाली सरपंच देशराज फौजी सहित अनेक गांवों के सरपंच व अनेक लोग उपस्थित रहे।

मुख्य शिलान्यास : गांव जेरपुर ऊष्मापुर व राजावास का मेगा रीचार्ज एवं सिंचाई प्रोजेक्ट -10 करोड़। गांव डिगरोता का मेगा रीचार्ज एवं सिंचाई प्रोजेक्ट- आठ करोड़। गांव डिगरोता में पिंक जिम- 41 लाख।

प्रमुख उद्घाटन

कार्य	विभाग	लागत
गांव जड़वा में मेगा रीचार्ज एवं सिंचाई प्रोजेक्ट	सिंचाई विभाग	2.5 करोड़
गांव डालनवास में मेगा रीचार्ज एवं सिंचाई प्रोजेक्ट	सिंचाई विभाग	2.5 करोड़
गांव डिगरोता में पंचायत के विभिन्न कार्य	पंचायत	41 लाख
गांव डेरोली जाट से नानगवास रास्ते को पक्का करना	मार्केटिंग बोर्ड	55 लाख
डेरोली जाट से सीहमा रास्ते को पक्का करना	मार्केटिंग बोर्ड	74 लाख
गांव डेरोली जाट में विभिन्न विकास कार्य	पंचायत	35 लाख
गांव खातीवास से डेरोली जाट रास्ते की पक्का करना	मार्केटिंग बोर्ड	95 लाख
गांव खातीवास से बेरी रास्ते को पक्का करना	मार्केटिंग बोर्ड	40 लाख
गांव खातीवास में पीने के पानी का बूस्टिंग स्टेशन व पाइप लाइन	जन स्वास्थ्य विभाग	1.14 करोड़
गांव खातीवास में कच्ची फिरनी का निर्माण	पंचायती राज विभाग	85 लाख
गांव जेरपुर में विभिन्न विकास कार्य		10 लाख
गांव जड़वा से सोहड़ी	मार्केटिंग बोर्ड	1.15 करोड़
जेरपुर से पाली वाया रेलवे स्टेशन सड़क का चौड़ीकरण व पुनर्निर्माण	लोक निर्माण विभाग	2.78 करोड़
नांगल सिरोही से कोथल सड़क व लिंक गांव खातीवास सड़क का चौड़ीकरण व पुनर्निर्माण	लोक निर्माण विभाग	2.38 करोड़

विशेष उद्घाटन : गांव डालनवास में पंचायत द्वारा वालीबॉल खेल मैदान एवं ग्राउंड का निर्माण- 5 लाख।

आरआरसीएम स्कूल में बच्चों ने मनाया फन डे

महेंद्रगढ़। आरआरसीएम स्कूल माजरा कला में फन डे मनाया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य सत्यवीर यादव ने बताया कि कक्षा प्रथम से 12वीं कक्षा तक के बच्चों को वॉटर पार्क, बुचावास का भ्रमण करवाया गया। वहीं प्री-प्राइमरी कक्षा के बच्चों ने स्कूल कैंपस में फन डे मनाया। एक तरफ जहां बडे बच्चों ने वाटर पार्क में मौज-मस्ती की, वहीं दूसरी तरफ नन्हें-नन्हें बच्चों ने स्कूल कैंपस में ही पानी के फव्वारों के बीच मस्ती की। ग्रुप चेयरमैन रोशनलाल यादव ने बताया कि स्कूल प्रबंधन समय-समय पर बच्चों के सर्वांगीण विकास व मनोरंजन के लिए गतिविधियों का संचालन करता रहता है। इसके साथ ही स्कूल प्रबंधन ने हरियाणा सरकार के आदेशानुसार भीषण गर्मी को देखते हुए 25 मई से 30 जून तक ग्रीष्मकालीन अवकाश की घोषणा कर दी है। इस अवसर पर प्राइमरी हैड रीना अरोडा, सत्यपाल, राममेहर पीटीआई, रामसिंह, पंकज, अशोक कुमार सहित समस्त विद्यालय स्टॉफ मौजूद रहा।

रामचंद्र पब्लिक स्कूल में मनाया फन डे

कनीना। रामचंद्र पब्लिक स्कूल में फन डे सेलिब्रेशन बड़े ही उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। इस दौरान विद्यालय का वातावरण खुशियों और ऊर्जा से भर गया। विद्यार्थियों ने विभिन्न खेलों मनोरंजक गतिविधियों और सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने अपने विचारों को रचनात्मक और प्रभावशाली नारों के माध्यम से प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों ने स्वच्छता पर्यावरण संरक्षण शिक्षा और अनुशासन जैसे विषयों पर आकर्षक स्लोगन लिखकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रधानाचार्य ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक होते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी गतिविधियां बच्चों में आत्मविश्वास और रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं।

सरस्वती स्कूल में हुई वाटर प्रतियोगिता

बच्चों ने वाटर टैंक में स्नान किया तथा तैराकी का लिया आनंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

भीषण गर्मी के बीच विद्यार्थियों को राहत देने व जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से सरस्वती सीनियर सेकेंडरी स्कूल में वाटर क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन स्कूल की प्राचार्या वंदना यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिसमें बच्चों ने वाटर टैंक में स्नान किया तथा तैराकी का आनंद लिया। उन्होंने कहा कि गर्मी के मौसम में पानी का महत्व और भी बढ़ जाता है। उन्होंने विद्यार्थियों को जल संरक्षण का संदेश देते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को पानी की एक एक बूंद बचाने का संकल्प लेना चाहिए। बच्चों को अपने घरों की छतों और आसपास पक्षियों के लिए पानी से भरे सकोरे रखने के लिए भी प्रेरित किया, ताकि गर्मी में पक्षियों को राहत मिल सके।

नांगल चौधरी। प्रतियोगिता में जल क्रीड़ा का आनंद लेते विद्यार्थी। *फोटो : हरिभूमि*

ईंधन के बढ़ते दामों ने तोड़ी जनता की कमर

नारनौल। जननायक जनता पार्टी (जजपा) के जिला प्रवक्ता विजय छीलरो ने केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार पर जोरदार हमला बोलते हुए कहा कि देश आज दोहरी मार झेल रहा है-एक तरफ लगातार बढ़ती महंगाई और दूसरी तरफ भयावह बेरोजगारी। उन्होंने कहा कि पेट्रोल, डीजल और सीएनजी के दामों में लगातार हो रही बढ़ोतरी ने आम जनता का जीना मुश्किल कर दिया है। छीलरो ने कहा कि हर दूसरे दिन ईंधन के दाम बढ़ाना सरकार की आदत बन चुकी है। इसका सीधा असर ट्रांसपोर्ट, खेती-बाड़ी, व्यापार और रोजमर्रा की जरूरतों पर पड़ रहा है। खाद्य पदार्थों से लेकर निर्माण सामग्री तक हर चीज महंगी हो चुकी है, जिससे गरीब और मध्यम वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित है। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार टैक्स के नाम पर जनता से भारी वसूली कर रही है। सरकार ने पेट्रोल-डीजल को कमाई का सबसे बड़ा जरिया बना लिया है।

लम्बोरिया एकेडमी में पक्षियों के लिए सकोरे रखने का दिया संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

लंबोरिया एकेडमी बूढ़वाल में निदेशक राजपाल लंबोरा के अध्यक्षता में स्वास्थ्य पर आधारित सेमिनार आयोजित किया गया। जिसमें विद्यार्थियों को पक्षियों के लिए पानी के सकोरे रखने का संदेश दिया। इस दौरान बारिश होने पर एक पौधा माता व पिता के नाम लगाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि लगातार बढ़ रही गर्मी के कारण पशु, पक्षी पानी के लिए तरस रहे हैं। ऐसे में प्रत्येक विद्यार्थी अपने घर की छत पर एक सकोरा अवश्य रखे तथा उसमें प्रतिदिन सुबह ताजा पानी डाले, ताकि पक्षियों को राहत मिल सके। उन्होंने पक्षियों के लिए दाना डालने की भी अपील की। विद्यालय के सभी विद्यार्थियों व अध्यापकों ने पक्षियों की सेवा करने व नियमित रूप से पानी और दाना उपलब्ध कराने की प्रतिज्ञा ली। विद्यार्थियों को छुट्टियों का सदुपयोग करने की सलाह देते हुए कहा कि अवकाश के दौरान पढ़ाई से पूरी तरह दूर नहीं होना चाहिए। उन्होंने बच्चों से रोज कम से कम दो घंटे अध्ययन करने का आह्वान किया, ताकि पढ़ाई से निरंतर जुड़ाव बना रहे।

नांगल चौधरी। पक्षियों को दाना पानी मुहैया कराने की शपथ लेते विद्यार्थी।

पीटीएम ग्रीष्मकालीन अवकाश बच्चों के सर्वांगीण विकास का समय: अशोक

455 राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अभिभावक शिक्षक की हुई बैठक, ग्रीष्मकालीन गृहकार्य सौंपा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार जिला महेन्द्रगढ़ के सभी 455 राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में शनिवार को अभिभावक-शिक्षक बैठक (पीटीएम) का आयोजन किया गया। इस दौरान शिक्षकों द्वारा विभाग द्वारा निर्धारित सभी गतिविधियों का सफल संचालन किया गया। बैठक में कक्षा पहली से पांचवीं तक के विद्यार्थियों को ग्रीष्मकालीन अवकाश के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया गृहकार्य भी वितरित किया गया। गृहकार्य को इस तरह डिजाइन किया गया है कि बच्चे अवकाश के दौरान खेल-खेल में सीख सकें और बुनियादी साक्षरता व संख्यात्मकता से जुड़े रहें। जिला एफएलएन समन्वयक डॉ. विक्रम सिंह ने बताया कि यह पीटीएम केवल बच्चों के लिए नहीं, बल्कि अभिभावकों के लिए भी थी। इसका उद्देश्य अभिभावकों में अवकाश के दौरान बच्चों के सीखने के कार्यों के प्रति रुचि पैदा करना है, ताकि वे बच्चे को दिए गए गृहकार्य को भली-भांति समझ सकें और उसे पूरा करने में यथासंभव सहयोग कर सकें।

नारनौल। पीटीएम में भाग लेते हुए गणमान्य लोग, शिक्षक एवं बच्चे।

जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार शर्मा ने अभिभावकों से विशेष आह्वान करते हुए कहा कि ग्रीष्मकालीन अवकाश बच्चों के सर्वांगीण विकास का समय है। सभी अभिभावक बच्चों को अधिक से अधिक सहयोग दें और यह सुनिश्चित करें कि बच्चे दिए गए गृहकार्य को समय पर पूरा करें। आपका सहयोग ही बच्चों की नींव मजबूत करेगा। पीटीएम में शिक्षकों ने अभिभावकों के साथ बच्चों की प्रगति साझा की और अवकाश के दौरान बच्चों को मोबाइल/टीवी से दूर रखकर रचनात्मक कार्यों में लगाने के सुझाव दिए। अभिभावकों ने भी इस पहल की सराहना की और सहयोग का आश्वासन दिया। जिले में एकसाथ सभी 455 विद्यालयों में पीटीएम का यह आयोजन एफएलएन मिशन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

एमआर स्कूल अटेली में आधारकार्ड अपडेट कैंप का हुआ समापन

नारनौल। अटेली स्थित एमआर पब्लिक स्कूल में डाकघर अटेली की ओर से दो दिवसीय आधार कार्ड अपडेशन कैंप का समापन हुआ। इस कैंप में डाकघर की ओर से आए डाकघर सहायक संदीप कुमार ने आधार कार्ड से जुड़ी कमियों को दूर कर क्षेत्र वासियों वं विद्यार्थियों को सेवा प्रदान की तथा आधार कार्ड अपडेट किए। डाकघर के जनसंपर्क निरीक्षक हिम्मत सिंह ने लोगों की आधार कार्ड से जुड़ी समस्याएं सुनी तथा उनका समाधान करवाया। इस कैंप में नए आधार कार्ड भी बनाए गए, इसके साथ आधार कार्ड से जुड़ी खामियों जैसे नाम, पता, जन्म तिथि, फिंगरप्रिंट, मोबाइल नंबर आदि को भी दुरुस्त किया गया। विद्यालय के चेयरमैन सियाराम यादव ने क्षेत्र से आए लोगों का स्वागत किया। विद्यालय प्राचार्य मनोज कुमार ने डाकघर से आए कर्मचारियों व अधिकारियों का सहयोग किया।

सूचना

मैं, कमला पत्नी स्व. वेद प्रकाश जोशी, गांव भूषण कला, तहसील नारनौल, जिला महेंद्रगढ़ (हरियाणा) बयान करती हूं कि मेरा पुत्र दिनेश जोशी और उसकी पत्नी चंचल मेरे कहने सुनने से बाहर हैं। वह आए दिन घर में लड़ाई-झगड़ा झगड़ा करते हैं। इसलिए मैं उनको अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखल करती हूं। भविष्य में उनसे लेनदेन करने वाला स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरी व मेरे बाकी परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

पारदी गैंग का खुलासा : कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष के आवास में घुसने वाले इसी गैंग के बदमाश, 7 में से 2 आरोपित वारदात में शामिल

आरोपितों से अब तक की पूछताछ में चार वारदातों का हुआ खुलासा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

अपराधों पर अंकुश लगाने लिए पुलिस का विशेष अभियान जारी है। अब एक ओर पुलिस को बड़ी कामयाबी मिली है। सीआईए नारनौल, सीआईए महेंद्रगढ़ और थाना शहर महेंद्रगढ़ की संयुक्त टीमों ने दो दिन पहले मुठभेड़ के बाद अंतरराज्यीय पारदी गुलेल गैंग के सात बदमाशों को हथियारों सहित पकड़ा था। जब इन आरोपितों से पूछताछ की तो बड़ा खुलासा हुआ है। पकड़े गए आरोपितों में से दो आरोपित 16 मई को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह के आवास में घुसने की वारदात और नारनौल क्षेत्र से दो बाइक चोरी करने की वारदात में संलिप्तता मिली है। पूछताछ में यह भी सामने आया है कि अन्य बदमाश भी इसी गैंग के सदस्य थे।

पुलिस की प्रारंभिक पूछताछ और जांच में कई बड़े खुलासे हुए हैं। आरोपितों से पूछताछ में चार वारदातों का खुलासा हुआ है। आरोपितों ने 14 मई को शहर भिवानी क्षेत्र में चोरी की वारदात को अंजाम दिया था। इसके बाद अगले दिन 15 मई को आरोपितों ने शहर महेंद्रगढ़ क्षेत्र में दो बाइक चोरी की। फिर 16 मई को आरोपितों ने शहर नारनौल क्षेत्र में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के घर में घुसने और शहर नारनौल क्षेत्र से दो बाइक चोरी करने की वारदातों को अंजाम दिया था। पुलिस की ओर से सभी आरोपितों का आपराधिक रिकॉर्ड खंगाला जा रहा है और मामले में आगामी कार्रवाई जारी है।

नारनौल। पकड़े गए आरोपित। फोटो : हरिभूमि

सीसीटीवी के तार काटे, तेजधार हथियार से ताले तोड़े, स्टाफ कमरे को किया बंद

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह के आवास पर आधी रात बदमाश घुसे

नारनौल। 17 मई को प्रकाशित समाचार।

यह है पूरा मामला

पुलिस प्रवक्ता सुमित कुमार ने बताया कि पुलिस ने 22 मई को सात आरोपितों को गुप्त सूचना के आधार पर शहर महेंद्रगढ़ क्षेत्र से पकड़ा था। इस दौरान हुई मुठभेड़ में दो आरोपित घायल हो गए थे। पकड़े गए सभी सात आरोपित मध्य प्रदेश के मूल निवासी हैं। जिनकी पहचान मनीराम (निवासी बिलाखेड़ी, गुना), अभय (निवासी कनेरा, गुना), अर्जुन (निवासी कनेरा, गुना), विरेन्द्र (निवासी बिलाखेड़ी, गुना), सुनील (निवासी माधौगढ़, अशोकनगर), चांद (निवासी पटेल नगर, गुना) और विजय (निवासी कनेरा, गुना) के रूप में हुई। आपराधिक रिकॉर्ड के अनुसार इनमें से विजय पर मध्य प्रदेश पुलिस द्वारा 15 हजार रुपये और चांद पर 5 हजार रुपये का नकद इनाम घोषित था। इस दौरान पुलिस ने एक आधुनिक स्वचालित पिस्तौल (मैगजीन व 3 जिंदा कारतूस), एक देसी कट्टा (1 खाली खोखा) बरामद किए थे। इसके अलावा आरोपितों के पिट्ठू बैग से लोहे का नुकीला सरिया, रेती, प्लास, वायर कटर, पेचकस, एक मोबाईल फोन, एक घड़ी और चोरी व सेंधमारी में इस्तेमाल होने वाली गुलेल सहित अन्य सामग्री बरामद हुई थी। इस संदर्भ में थाना शहर महेंद्रगढ़ में आरोपितों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और आर्म्स एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस द्वारा पांच आरोपितों को आगे की पूछताछ और अन्य वारदातों के खुलासे के लिए चार दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है, जबकि मुठभेड़ में घायल हुए दो आरोपित अभी उपचाराधीन हैं।

खबर संक्षेप

जाम लगाने वाले वाहन चालक पर केस दर्ज

कनीना। शहर थाना पुलिस ने सड़क के किनारे ट्रक खड़ा कर यातायात बाधित करने के आरोप में चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया है। घटना 22 मई की है, जब पुलिस टीम गश्त के दौरान बस स्टैंड भड़फ के पास मौजूद थी। बताया गया कि 18 टायरा ट्रक मुख्य सड़क के बीच खड़ा था, जिससे यातायात पूरी तरह ठप हो गया था। जब पुलिस ने चालक से खिड़की खुलवाकर पूछताछ की, तो उसकी पहचान राजपाल उर्फ राजा निवासी रामपुर उत्तर प्रदेश के रूप में हुई।

अपहरण मामले में आरोपित गिरफ्तार

नारनौल। पुलिस ने युवक का अपहरण कर उसके साथ मारपीट करने व घटना का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल करने के मामले में कार्रवाई करते हुए एक और आरोपित प्रिंस वासी नारनौल को गिरफ्तार किया है। जिससे वारदात में प्रयोग की गई बाइक बरामद कर जब्त की गई है। इस मामले में पुलिस द्वारा चार आरोपितों को पहले गिरफ्तार किया गया था, जिनसे वारदात में इस्तेमाल की गई लाठी बरामद की गई थी।

दिल्ली का भटका हुआ बच्चा सकुशल परिजनों को सौंपा

सतनाली। सतनाली पुलिस ने सतर्कता का उदाहरण पेश करते हुए रास्ता भटककर आए एक बच्चे को उसके परिवार से मिलवाने में सराहनीय कार्य किया है। शुक्रवार देर शाम नियमित गश्त के दौरान पुलिस टीम को यह बच्चा सतनाली क्षेत्र में अकेला और परेशान हालत में घूमता हुआ मिला था। बच्चे ने पुलिस को बताया कि वह मूल रूप से दिल्ली का रहने वाला है। पुलिस ने बच्चे के दिल्ली स्थित परिजनों की जानकारी जुटाकर उनसे संपर्क स्थापित किया गया।

लोगों में फैला आक्रोश, बालाजी चौक पर लगाया जाम

शहर में बंदरों का आतंक, झुंड ने घर में घुसकर व्यक्ति को काटा

प्रशासन के खिलाफ की नारेबाजी

एसडीएम के आश्वासन के बाद खोला जाम

कई बार प्रशासन को शिकायत देने के बावजूद कोई स्थायी समाधान नहीं निकाला

▶▶ लोगों का कहना था कि शहर में पिछले कई महीनों से बंदरों का आतंक बढ़ता जा रहा है। बंदर आए दिन लोगों पर हमला कर रहे हैं, घरों में घुसकर नुकसान पहुंचा रहे हैं और छोटे बच्चों व महिलाओं में भय का माहौल बना हुआ है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

शहर में बंदरों के आतंक से लोग परेशान हैं। शनिवार को शहर के एक मोहल्ले में बंदरों के झुंड ने घर में घुसकर एक व्यक्ति को बंदरों ने काट लिया, जिसके बाद स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश फैल गया। घटना के विरोध में लोगों ने शहर के बालाजी चौक सड़क पर जाम लगाकर प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की। एसडीएम योगेश सैनी से फोन पर बात कर रविवार सुबह 11 बजे बैठक कर निर्णय लेने का आश्वासन दिया। करीब दस मिनट तक चले हंगामे के बाद फोन पर एसडीएम के आश्वासन पर लोगों ने जाम खोला।

शहर के मोहल्ला बिडाढ़ निवासी सुशील शर्मा बाथरूम से निकले थे, तभी बंदर अचानक घर में घुस आए और उनके पैर पर काट लिया। पैर में गहरा घाव हो गया और हड्डी भी दिखने लगी। घायल सुशील शर्मा को तत्काल शहर के नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों ने उन्हें इंजेक्शन दिए और उनके पैर में तीन टांके लगाए। किसी तरह सुशील शर्मा ने बंदर को भगाया।

महेंद्रगढ़। बालाजी चौक पर जाम लगाया बैठे लोग व बंदरों के काटने से पैर पर बने जख्म के निशान। फोटो : हरिभूमि

लोगों में आक्रोश

घटना के बाद स्थानीय लोगों में गुस्सा फैल गया। लोगों का कहना था कि शहर में पिछले कई महीनों से बंदरों का आतंक बढ़ता जा रहा है। बंदर आए दिन लोगों पर हमला कर रहे हैं, घरों में घुसकर सामान को नुकसान पहुंचा रहे हैं और छोटे बच्चों व महिलाओं में भय का माहौल बना हुआ है। कई बार प्रशासन को शिकायत देने के बावजूद कोई स्थायी समाधान नहीं निकाला गया। नाराज लोगों ने मुख्य सड़क पर एकत्र होकर जाम लगा दिया। प्रदर्शनकारियों ने प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए बंदरों को पकड़ने की मांग की।

नागरिकों ने दी चेतावनी

वहीं स्थानीय नागरिकों ने चेतावनी दी कि यदि जल्द समस्या का समाधान नहीं किया गया तो वे बड़ा आंदोलन करने को मजबूर होंगे। धरने पर बैठे सुरेंद्र, आशीष व अन्य लोगों ने बताया कि नगर पालिका बंदर नहीं पकड़ रही है। टेंडर लगाती है और रुपये लेकर बंदर पकड़ने की प्रक्रिया केवल कागजों तक रखती है। इस पर न तो विधायक, चेयरमैन व एसडीएम संज्ञान ले रहे हैं। नगर पालिका एमई राजेश कुमार से बात की तो उन्होंने अवकाश होने का नाम लिया और जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ दिया।

एसडीएम ने किया फोन

बाद में एसडीएम ने फोन पर लोगों से बातचीत की। उन्होंने नगर पालिका की टीम को जल्द कार्रवाई करने का निर्देश देने का आश्वासन दिया। साथ ही शहर में बंदरों को पकड़ने के लिए विशेष अभियान चलाने की बात कही। एसडीएम के आश्वासन के बाद लोगों का गुस्सा शांत हुआ और उन्होंने जाम समाप्त कर दिया। प्रशासन ने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की है।

जाम में फंसे वाहन

जाम के कारण सड़क के दोनों ओर वाहनों की कतार लग गई और राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। सूचना मिलने पर पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे और लोगों को समझाने का प्रयास किया, लेकिन प्रदर्शनकारी एसडीएम को मौके पर बुलाने की मांग पर अड़े रहे।

मंडी अटेली। पेयजल किल्लत को लेकर घरों के बाहर खड़े ग्रामीण एवं महिलाएं।

टैंकरों के सहारे कस्बावासी

धनुंदा अंडरपास क्षेत्र में गहराया पेयजल संकट

हरिभूमि न्यूज ▶▶ मंडी अटेली

अटेली क्षेत्र के धनुंदा से अंडरपास तक बसे कस्बावासी इन दिनों भीषण पेयजल संकट का सामना कर रहे हैं। गर्मी के चलते हालात और बिगड़ गए हैं, जिससे लोगों को पीने के पानी के लिए भारी परेशानी झेलनी पड़ रही है।

यहां के निवासियों वीरेंद्र सिंह, प्रमोद, योगेश कुमार, सुमित यादव, महेश कुमार, भगवान सिंह, ओमप्रकाश, पिंकेश कुमार, पवन कुमार, तस्वीर सिंह, उदयभान, देवेंद्र कुमार, महेंद्र सिंह व गौरव शर्मा सहित अन्य ने बताया कि समस्या को लेकर जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को अवगत करा दिया है, लेकिन अब तक कोई समाधान नहीं हुआ। कस्बावासियों का कहना है कि क्षेत्र में लगी पेयजल लाइन काफी पुरानी है, जिस कारण पर्याप्त मात्रा में पानी की आपूर्ति नहीं हो पा रही। कई बार लिखित शिकायत देने के बावजूद स्थिति जस की तस बनी हुई है। पानी की किल्लत के चलते लोग टैंकरों से पानी मंगवाकर अपना गुजारा कर रहे हैं, जिससे अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी बढ़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि समय रहते समाधान नहीं किया गया तो समस्या और गंभीर हो सकती है। कस्बावासियों ने सरकार व संबंधित विभाग से मांग की है कि जल्द से जल्द समस्या का स्थाई समाधान किया जाए और क्षेत्र में नियमित पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

बवाना के पास सड़क हादसे में पिता के सामने बेटे की मौत

कनीना। सेहलंग महेंद्रगढ़ सड़क मार्ग पर बवाना गांव के पास सड़क हादसे में बेटे की जान चली गई, जबकि पिता बच गया। घटना शुक्रवार दोपहर करीब 12 बजे की बताई गई है, जब सेहलंग निवासी शीशराम अपने बेटे अभिमन्यु के साथ बाइक पर सवार होकर महेंद्रगढ़ जा रहे थे। बवाना के पास पहुंचे तो तेज रफ्तार आई गाड़ी ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। बाइक सवार दोनों पिता व पुत्र सड़क पर गिर गए। हादसे में शीशराम को हल्की चोटें आई, लेकिन उनका बेटा अभिमन्यु गंभीर रूप से घायल हो गया। राहगीरों की मदद से घायलों को उपचार के लिए तुरंत उप नागरिक अस्पताल महेंद्रगढ़ पहुंचाया गया। जहां डॉक्टरों ने अभिमन्यु को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने पीड़ित पिता की शिकायत पर गाड़ी चालक के खिलाफ केस दर्ज कर शव का पंचनामा करवा परिजनों को सौंप दिया।

नारनौल। चाइनीज मांझे की जांच करती पुलिस। फोटो : हरिभूमि

पुलिस ने चलाया चेकिंग अभियान

नारनौल। थाना शहर एसएचओ मुकेश कुमार के नेतृत्व में पुलिस ने शहर के विभिन्न बाजारों में सघन चेकिंग अभियान चलाया। अभियान का मुख्य उद्देश्य दुकानों पर प्रतिबंधित व खतरनाक चाइनीज मांझे की बिक्री की जांच करना तथा लोगों को इसके दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना था। जिले में श्रावण मास में तीज त्योहार पर पतंग उड़ाई जाती हैं। इसी को देखते हुए पुलिस ने शहर में अभियान चलाया। चेकिंग के दौरान पुलिस टीम ने पतंग और डोर बेचने वाली छोटी-बड़ी कई दुकानों का औचक निरीक्षण किया। पुलिस ने दुकानों में रखे सामान की बारीकी से जांच की, लेकिन किसी भी दुकान पर चाइनीज मांझा बरामद नहीं हुआ। अभियान के दौरान पुलिस अधिकारियों ने दुकानदारों से सीधा संवाद करते हुए उन्हें चाइनीज मांझा नहीं बेचने की हिदायत दी। पुलिस ने बताया कि चाइनीज मांझा प्लास्टिक और कांच के खतरनाक मिश्रण से तैयार किया जाता है, जो इंसानों के लिए गंभीर हादसों का कारण बन सकता है। इसके अलावा यह पक्षियों के लिए भी बेहद घातक साबित होता है। पुलिस ने दुकानदारों को स्पष्ट निर्देश दिए कि भविष्य में कोई भी प्रतिबंधित मांझा या खतरनाक डोर अपनी दुकानों पर न रखें। साथ ही चेतावनी दी कि यदि कोई व्यक्ति चाइनीज मांझे की बिक्री या भंडारण करते हुए पाया गया, तो उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

टीबी स्क्रीनिंग अभियान, 82 लोगों की जांच

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के तहत शनिवार को गांव अनावास में विशेष टीबी स्क्रीनिंग व जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। पीएचसी धनौंदा प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रतीक के मार्गदर्शन में स्वास्थ्य टीम ने घर-घर जाकर 82 लोगों की टीबी लक्षणों के लिए स्क्रीनिंग की। खांसी, बुखार व वजन कम होने जैसे लक्षण वाले 16 संदिग्ध मरीजों के बलगम के सैंपल जांच के लिए लिए गए। टीबी एचवी युद्धवीर ने बताया कि टीबी लाइलाज नहीं है। दो हफ्ते से ज्यादा खांसी, शाम को बुखार व वजन घटना इसके मुख्य लक्षण हैं। जांच व इलाज पूरी तरह निःशुल्क है। स्वास्थ्यकर्मी विक्रम यादव, देवेंद्रा व सोनिया ने ग्रामीणों को बताया कि टीबी की बीमारी छह माह का इलाज लेने से ठीक हो जाती है। टीबी की दवा बीच में छोड़ना खतरनाक है। पूरा कोर्स करना जरूरी है। आशा वर्कर कविता ने सभी को निक्षय पोषण योजना के तहत मिलने वाले एक हजार रुपये प्रतिमाह की जानकारी दी।

महेंद्रगढ़। शिविर में उपस्थित मरीज। फोटो : हरिभूमि

अंडरपास में लाइट व्यवस्था की मांग, सौंपा ज्ञापन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ मंडी अटेली

अटेली मंडी के अंडरपास क्षेत्र में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था नहीं होने के कारण आमजन को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए नगर पालिका अटेली मंडी ने रेलवे विभाग को ज्ञापन सौंपकर समाधान की मांग की है। नगर पालिका प्रधान संजय गोयल द्वारा मंडल रेल प्रबंधक एनडब्ल्यूआर जयपुर को भेजे गए पत्र में बताया गया है कि अटेली मंडी के अंडरपास (एलसी 29 व 30) के पास स्थित फाटक रोड़ पर रात्रि के समय अंधेरा छाया रहता है। यहां पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था नहीं होने से राहगीरों और वाहन चालकों को आवागमन में कठिनाई होती है। विशेष रूप से रात्रि के समय यह समस्या और अधिक गंभीर हो जाती है, जिससे दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है। पत्र में यह बताया है कि अंडरपास क्षेत्र से प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग और वाहन गुजरते हैं ऐसे में प्रकाश व्यवस्था का अभाव सुरक्षा के लिहाज से चिंताजनक है।

मंडी अटेली। अंडरपास में लाइट व्यवस्था की मांग ज्ञापन सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डैंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

प्रदेश के सभी जिला मौलिक शिक्षा अधिकारियों को अति-आवश्यक पत्र जारी

सरकारी स्कूलों में अब एलपीजी की जगह पीएनजी देने की तैयारी

- जिला शिक्षा अधिकारियों से अपने-अपने जिलों के स्कूलों से डेटा एकत्र कर एक निश्चित तालिका फॉर्मेट में निदेशालय को तुरंत भेजें जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

सरकारी स्कूलों में प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना अर्थात मिड-डे मील के तहत खाना पकाने के लिए अब पारंपरिक एलपीजी सिलेंडरों की जगह पाइप्ड नेचुरल गैस कनेक्शन देने की कवायद शुरू हो गई है। इसका मुख्य उद्देश्य स्कूलों में ईंधन की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना, बच्चों के लिए अधिक सुरक्षित माहौल तैयार करना और पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा को बढ़ावा देना है। इस संबंध में निदेशक मौलिक शिक्षा हरियाणा (शिक्षा सदन, पंचकूला) की ओर से प्रदेश के सभी जिला मौलिक शिक्षा अधिकारियों को एक अति-आवश्यक पत्र जारी किया गया है।

विभागीय पत्र के अनुसार भारत सरकार के पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा जारी अर्ध-सरकारी पत्र के संदर्भ में राज्य सरकार ने तुरंत एक्शन लिया है। निदेशालय ने सभी जिलों से उनके अधिकार क्षेत्र में आने वाले सभी सरकारी स्कूलों में पीएनजी कनेक्शन की संभावित मांग का आकलन करने को कहा है।

निर्धारित प्रारूप में मांगी गई पूरी जानकारी

सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे अपने-अपने जिलों के स्कूलों से डेटा एकत्र कर एक निश्चित तालिका फॉर्मेट में जानकारी निदेशालय को तुरंत भेजें। इस फॉर्मेट में जो महत्वपूर्ण जानकारियां मांगी गई हैं उनमें स्कूल का नाम और उसका सटीक पता पिन कोड सहित, स्कूल की प्रकृति जैसे संस्थान/आवासीय आदि, गैस पाइपलाइन की नजदीकी दूरी, स्कूल में वर्तमान में सालाना एलपीजी खपत (19 किलोग्राम व्यावसायिक या 14.2 किलोग्राम घरेलू सिलेंडर के आधार पर) तथा आवश्यक पीएनजी कनेक्शन पॉइंट्स की संख्या की जानकारी शामिल है।

क्यों महत्वपूर्ण है यह कदम?

शिक्षा विभाग के सूत्रों का मानना है कि स्कूलों में पीएनजी कनेक्शन होने से हर महीने सिलेंडर बदलने, उनके खत्म होने पर आने वाली दिक्कतों और भंडारण से जुड़े सुरक्षा जोखिमों से मुक्ति मिलेगी। साथ ही यह व्यवस्था मिड-डे मील योजना के सुचारू संचालन में मील का पत्थर साबित होगी।

जमीनी स्तर पर अधिकारियों ने कसी कमर

मुख्यालय से आदेश जारी होते ही जिला स्तर पर भी प्रशासनिक मशीनरी सक्रिय हो गई है। जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी नारनौल कार्यालय ने इस पत्र पर त्वरित संज्ञान लेते हुए जिले के सभी खंड शिक्षा अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई और जल्द से जल्द रिपोर्ट तैयार करने के निर्देश अग्रसारित कर दिए हैं, ताकि समय सीमा के भीतर डेटा ईमेल के माध्यम से मुख्यालय भेजा जा सके।

जापानी संस्कृति अपनी विशिष्ट जीवनशैली और अनूठे दर्शन के लिए पूरी दुनिया में जानी जाती है। यहां पर मेनीफेस्टेशन को केवल इच्छा पूर्ति का साधन ही नहीं, बल्कि अनुशासन, कृतज्ञता और ब्रह्मांड के साथ तालमेल बिठाने की एक कला भी माना जाता है। इसमें कई ऐसी कारगर तकनीकें अपनाई जाती हैं, जो आपके जीवन को पूरी तरह सकारात्मक दिशा में मोड़ देती हैं। इनमें से कुछ तकनीकों के बारे में जानिए।

जीवन की दिशा बदल देगा जापानी मेनीफेस्टेशन

कवर स्टोरी / शिखर चंद जैन

एक मशहूर जापानी कहावत है- 'सात बार गिरो, आठ बार उठो।' इससे ही साबित होता है कि जापानी संस्कृति और जीवनशैली में कितनी सकारात्मकता शामिल है। जापानी जीवनशैली और दर्शन में जीवन की धारा बदलने के लिए मेनीफेस्टेशन के नायाब और बेहतरीन तरीके मौजूद हैं। जापानी मेनीफेस्टेशन को इच्छा पूर्ति का साधन मात्र नहीं माना जाता है। यह जीवन में संतुलन बनाने और तालमेल बिठाने की एक कला सिखाता है। जापानी मेनीफेस्टेशन तकनीकें हमें सिखाती हैं कि सपने देखना केवल पहला कदम है। उन सपनों को अनुशासन, कृतज्ञता और धैर्य के साथ सींचना ही असली कला है। कह सकते हैं कि मेनीफेस्टेशन का असली जादू, हार न मानने वाले जज्बे में छिपा होता है।

क्या है जापानी मेनीफेस्टेशन

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर व्यक्ति अपने सपनों को साकार करना चाहता है। उसके लिए हर संभव प्रयास करता है। पश्चिमी देशों में 'लॉ ऑफ अट्रैक्शन' की चर्चा जोरों पर है। लेकिन इसके विपरीत पूर्व में, विशेषकर जापान में, इच्छा पूर्ति के लिए सदियों पुराने ऐसे तरीके मौजूद हैं, जो न केवल प्रभावी हैं बल्कि व्यक्ति के चरित्र निर्माण में भी मदद करते हैं। जापानी मेनीफेस्टेशन तकनीकें केवल सोचने पर नहीं, बल्कि हमारे प्रयास करने और सपने साकार होने के गहरे संतुलन पर आधारित होती हैं। यहां जापानी मेनीफेस्टेशन से जुड़ी कुछ पद्धतियों के बारे में बता रहे हैं।

योशुकु करें सफलता का पूर्वाभास

यह एक प्राचीन जापानी तकनीक है, जिसे प्री सेलिब्रेशन के रूप में जाना जाता है। इसका मूल सिद्धांत यह है कि आप अपनी सफलता की खुशी पहले ही मना लें, ताकि उसे हकीकत में बदला जा सके। जापानी संस्कृति में यह माना जाता है कि 'भविष्य को वर्तमान में जीना' सफलता को आकर्षित करता है। यह उस भावना को पूरी तरह महसूस करने के बारे में है, जो आपको लक्ष्य प्राप्त करने के बाद होगी। इसमें कहा जाता है कि सबसे पहले स्पष्ट करें कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं? इसके बाद इमेजिन करें कि वह सफलता आपको प्राप्त हो चुकी है। इसे रियल फील करने के लिए अपने दोस्तों या परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों के साथ एक छोटी-सी पार्टी करें, दूसरों की 'बधाई' स्वीकार करें। आंखें बंद करें और इमेजिन करें कि आप क्या पहन रहे हैं, कौन आपके पास है और आप कैसा महसूस कर रहे हैं? फिर ब्रह्मांड को 'धन्यवाद' कहें जैसे कि काम पहले ही पूरा हो चुका है। या फिर अपनी डायरी में आज की तारीख डालें और लिखें, 'आज मैंने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया और मुझे बहुत खुशी हो रही है।' योशुकु दिमाग की प्रोग्रामिंग को प्रभावित करता है। यह आपके अवचेतन मन को सफलता के लिए ट्यून करता है। जब आप पहले ही 'जीत' महसूस करते हैं, तो असफलता का डर खत्म हो जाता है।

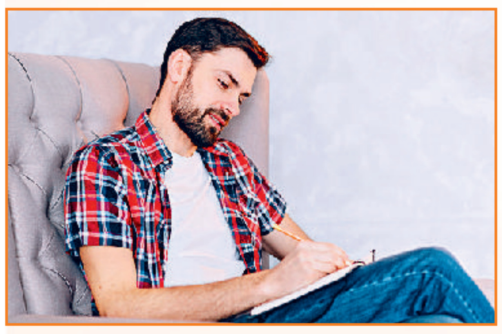

अरिगातो व्यक्त करते रहें कृतज्ञता

जापानी संस्कृति में 'कृतज्ञता' को सबसे बड़ी ऊर्जा माना गया है। 'अरिगातो' यानी धन्यवाद शब्द में जापानी लोग जादू मानते हैं। इस दर्शन के तहत मेनीफेस्टेशन की खास एक तकनीक है-'पैसों को धन्यवाद देना'। जब आप पैसे खर्च करते हैं, तो मन ही मन उसे 'अरिगातो' कहें ताकि वह समाज में खुशी फैलाए। जब पैसे आएं, तब भी 'अरिगातो' कहें। यह सकारात्मक ऊर्जा का एक चक्र बनाता है, जो प्रचुरता को आकर्षित करता है। आप स्वयं को संपन्न मानकर ज्यादा आत्मविश्वास के साथ काम करते हैं।

दारुमा गुड़िया संकल्प की दिलाए याद

दारुमा गुड़िया जापान की सबसे प्रसिद्ध मेनीफेस्टेशन तकनीकों में से एक है। यह लाल रंग की गोल गुड़िया होती है, जिसकी आंखें खाली यानी सफेद होती हैं। जब आप कोई बड़ा लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो दारुमा की बाईं आंख को काले रंग से भरते हुए अपनी इच्छा दोहराएं। अब इस गुड़िया को घर के किसी ऐसे कोने में रखें, जहां आपकी नजर बार-बार पड़े। जब वह लक्ष्य पूरा हो जाए, तब इसकी दूसरी (दाईं) आंख को काले रंग से भरें। यह तकनीक हमें लगातार हमारे संकल्प की याद दिलाती रहती है।

कइजन हर दिन सीखें नई तकनीक

मेनीफेस्टेशन केवल कल्पना करना नहीं होता है। कइजन तकनीक कहती है कि हर दिन केवल 1 प्रतिशत सुधार करें। अगर आप अमीर बनना चाहते हैं, तो हर दिन धन प्रबंधन के बारे में एक छोटी-सी ही सही कोई उपयोगी बात या तरीका सीखें। यह निरंतरता आपके अवचेतन मन को विश्वास दिलाती है कि आप बदल रहे हैं, और यही विश्वास हकीकत को बदल देता है।

कहने का सार है कि जापानी जीवनशैली और संस्कृति, मेनीफेस्टेशन के जरिए जीवन की धारा सकारात्मक दिशा में मोड़ने के लिए प्रेरित करती है। *

एमा ब्रह्मांड को अपनी इच्छा सौंपने की तकनीक

एमा एक तरह की प्रार्थना पट्टिकाएं होती हैं। जापानी मंदिरों (शिंतो मंदिरों) में लकड़ी की पट्टिकाएं लगी होती हैं, जिन्हें एमा कहा जाता है। लोग इन पर अपनी इच्छाएं लिखकर मंदिर में टांग देते हैं। यह आत्मसमर्पण की प्रक्रिया है। अपनी इच्छा को लिखकर ब्रह्मांड (या ईश्वर) को सौंप देना तनाव को खत्म करता है और आत्मविश्वास बढ़ाता है। जिससे मेनीफेस्टेशन की गति बढ़ जाती है।

इस बात में कोई दो राय नहीं है कि हमारी वर्तमान पहचान, हमारे अतीत पर टिकी होती है। यह इस बात पर निर्भर करती है कि हम अपनी स्मृतियों से कितना जुड़े हैं, उसे कितना मान देते हैं। आज तकनीक हमें अपने अतीत, रिश्तों और संवेदनाओं से निरंतर दूर कर रही है। ऐसे में स्मृतियों को संजोने का संकट खड़ा हो गया है।

स्मृतियां ही संजोती हैं यादें-रिश्ते-विरासत

जीवनशैली / लोकमित्र गौतम

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में जहां लोग भविष्य की दौड़ में लगातार आगे बढ़ रहे हैं, वहीं पीछे छूटती स्मृतियां हमें बार-बार यह याद दिलाती हैं कि बिना जड़ों के कोई भी वृक्ष लंबे समय तक हरा-भरा नहीं रह सकता। बचपन की शरारतें, बुजुर्गों की सीखें, संघर्षों की कहानियां, देश के इतिहास की गौरव गाथाएं और अपनों के साथ बिताए छोटे-छोटे पल, ये वो धरोहरें हैं, जो इंसान को अंदर से संपन्न बनाती हैं। वास्तव में स्मृतियां ही हर सभ्य समाज की सांस्कृतिक और भावनात्मक पूंजी होती हैं। जिस समाज की अपनी स्मृतियां जीवित रहती हैं, उसकी संवेदनाएं भी जीवित रहती हैं।

तस्वीरों से नहीं रहा भावनात्मक जुड़ाव: आज का डिजिटल युग स्मृतियों को एक अजीब से मोड़ पर ले आया है। हमारे हाथ में मौजूद मोबाइल फोन में एक ही समय पर लाखों तस्वीरें मौजूद होती हैं। जबकि पिछली सदी के श्याम-श्वेत जमाने में लोग कुछ फोटोज को हमेशा अपने सीने से लगाए रहते, उससे जुड़ी यादों के सहारे कभी हंस तो कभी रो लिया करते थे। एक दौर था, जब हमारे पास कई सारी तस्वीरें होना बहुत बड़ी खुशी देने वाली बात होती थी। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब शायद ही कोई व्यक्ति हो, जिसके मोबाइल में अपनी और अपनों की बेशुमार तस्वीरें न हों। लेकिन शायद ही उन तस्वीरों से कोई भावनात्मक जुड़ाव महसूस होता हो, जैसे पहले होता था। तस्वीरों को लेकर स्मृतियों का गायब होना या तस्वीरों को लेकर हमारे दिलोदिमाग में कोई खास पल, कोई खास मौका याद न आना, इस बात का सबूत है कि अब तस्वीरें हमारे जेहन में अपनी वैसी जगह नहीं बनातीं, जैसे पहले बनाया करती थीं।

स्मृतियां बनाती हैं संवेदनशील: स्मृतियां व्यक्ति को एक संवेदनशील नागरिक बनाने में भी महत्ती भूमिका निभाती हैं। बचपन के दिन, गांव की गलियां, मां के साथ जुड़ी अनगिनत स्मृतियां, दादा-दादी की कहानियां, शिक्षकों की सीखें और ऐतिहासिक घटनाओं के एहसास से बनी स्मृतियां वाकई यही सब चीजें होती हैं, जो हमें एक बेहद संवेदनशील मनुष्य बनाती हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी स्मृतियों से कट जाता है, तो वह अपने मूल से अपने जीवन के सबसे गहन हिस्से से कट जाता है। इसलिए राष्ट्रीय स्मृति दिवस हमें अपनी जड़ों से और अपने मूल से जुड़ने की प्रेरणा देता है।

स्मृतियों की सांस्कृतिक महत्ता: जब हम अपनी उपलब्धियों और संघर्षों को याद करते हैं, तब हम केवल इतिहास से नहीं गुजर रहे होते हैं, बल्कि अपने वर्तमान को भी मजबूत बना रहे होते हैं। हमारे अपने देश भारत में तो स्मृतियों का और भी गहरा महत्व है, क्योंकि हमारी समृद्ध विरासत लिखित होने से ज्यादा मौखिक है। लोककथाएं, लोकगीत, रामायण, महाभारत की कथाएं, गांवों और खेड़ों की दास्तानें, हमारे यहां पीढ़ी दर पीढ़ी ये स्मृतियां अगली पीढ़ियों को मिलती रहती हैं। यही कारण है कि भारतीय समाज में स्मरण को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व तक दिया गया है।

प्रदान करती हैं भावनात्मक शक्ति: आज के समय में स्मृतियों का एक और महत्व है, क्योंकि आज हम उन्हें मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी देखते हैं। सकारात्मक यादें, हर इंसान को भावनात्मक शक्ति देती हैं। परिवार के साथ बिताए गए मधुर क्षण, मित्रों की संगति या किसी प्रेरणादायक घटना की स्मृति, हमारे कठिन समय का सहारा होती है, क्योंकि उसमें सामाजिक जुड़ाव और भावनात्मक संतुलन की मजबूती होती है। हालांकि हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि स्मृतियों का संबंध केवल सुखद अनुभव और यादों से ही नहीं होता है। इतिहास की त्रासदियां भी इंसान के सामूहिक स्मृति का हिस्सा होती हैं। युद्ध, महामारी, विभाजन या प्राकृतिक आपदाएं, मुनष्य को न केवल गहरे तक झकझोरती हैं बल्कि लंबे समय के लिए एक टीस हो जाती हैं। फिर इन्हें याद रखना इसलिए जरूरी होता है ताकि हम भविष्य में ऐसी गलतियों को न दोहराएं।

इसलिए जरूरी है अपनी स्मृतियों से जुड़ाव: अपनी स्मृतियों से जुड़ाव बनाए रखना इस दृष्टि से नई पीढ़ी के लिए विशेष रूप से प्रभावी है, क्योंकि बच्चों और युवाओं में अपने परिवार और समाज के प्रति जो संवेदनशीलता और सामाजिक जुड़ाव का भाव आता है, वह इन स्मृतियों का ही नतीजा होता है। दादा-दादी की जीवन यात्राएं, पुराने संघर्षों की कहानियां और पारिवारिक परंपराएं, युवा पीढ़ी को जीवन के गहरे अर्थ समझाने में मदद करती हैं। लेकिन राष्ट्रीय स्मृति दिवस हमें यह भी सिखाता है कि आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाना भी बहुत जरूरी है। तकनीक का इस्तेमाल स्मृतियों को सहेजने के लिए तो किया जा सकता है, लेकिन अगर इसी तकनीक की चकाचौंध के गुलाम बने रहे, तो स्मृतियों को बनने का मौका नहीं मिलता।

तकनीक का हो संतुलित इस्तेमाल: आज की युवा पीढ़ी की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह अपने दिन का बहुत बड़ा समय, अपने मोबाइल फोन के साथ अकेले में गुजारते हैं। स्मृतियों पर यह बहुत बड़ा हमला है। जब हम अपने दिन का ज्यादातर खाली समय मोबाइल फोन को दे देंगे, तो भला हमारी याद रह जाने वाली स्मृतियां कब बनेंगी, किससे बनेंगी? इसलिए स्मृतियों के संबंध में तकनीक का अंधाधुंध इस्तेमाल थोड़ा फायदा लेकिन बहुत ज्यादा नुकसान भी देता है। क्योंकि भावनाओं का स्थान कभी तकनीक नहीं ले सकती। इसलिए हमें ध्यान रखना चाहिए कि तकनीक हमारे जीवन में इतनी अधिक हावी न हो जाए कि जो हमसे हमारी स्मृतियों को ही दूर करने लगे। *

दोहे / डॉ. शरद नारायण खरे

दिन बरसाता आग

सूरज आतिश बन गया, तपे नगर सब गांव।
जीवों में अकुलाहटें, ढूंढ़ रहे सब छांव।।
लू चलती है गति लिए, बिलख रहा इंसान।
सब नदियों से छिन गई, अब बस सारी आन।।
चाबुक सड़कों पर चले, आतंकित हर एक।
दिनकर के तो आजकल, नहीं इरादे नेक।।
कूलर, पंखे हंस रहे, शीतलता का मान।
मटके ने इस पल 'शरद', पाया नवल विहान।।
किरणें ना किरणें लगें, बरस रही है आग।
बचना तुम चाहो अगर, तो लो बचकर भाग।।
कंबल अब बेकार हैं, बिरथा ऊनी वस्त्र।
किरणें हमले कर रहीं, बनकर नित ही शस्त्र।।
नीर सरीखा बह रहा, तन से बेहद स्वेद।
इस मौसम में हो रहा, हर इक जन को खेद।।
बिजली लगती है सुखद, जिससे झरती शीत।
हम तुम, सब ही कष्ट में, सुन लो मेरे मीत।।
सुबह हमें लगती भली, दिन बरसाता आग।
फिर जी-भर फुंफकारता, आतप का तो नाग।।
नीर गिरे आकाश से, देखे मानव राह।
पर अब इस पल जग रही, हर दिल से ही आह।।

व्यंग्य / डॉ. मुकेश असीमित

सड़क का दर्शनशास्त्र

सड़क का भी एक दर्शन होता है, खासकर उस सड़क का, जो खुद सड़कछाप हो। वह सड़क जो कहीं टिककर नहीं रहती, हर मोहल्ले, हर मोड़, हर चुनावी वादे में आवारगी करती मिल जाती है। आजकल ऐसी सड़कें खूब चलन में हैं। चलन में इसलिए कि चलने लायक कम और दिखने लायक ज्यादा होती हैं।

सड़क साम्यवाद का जीवंत, धूल-धूसरित उदाहरण है। यहां गधे और घोड़े एक ही ताल में चलते हैं। कभी-कभी तो पहचान ही गड़बड़ा जाती है कि कौन-सा किस श्रेणी में है। पशु, पक्षी, मानव सबको सड़क समान भाव से अपनाती है। सड़क सबकी मां है। अब अगर मां की गोद में बैठकर कोई पूछे कि गधे-घोड़े का फर्क क्यों नहीं दिख रहा, तो इसमें मां का क्या दोष! सड़क तो बस बनी है आओ, चलो, दौड़ो, गिरो, रौंदो, जो लिखा लाए हो, वही होगा। आप सड़क पर हैं या सड़क पर लाए गए हैं, यह नियति का मामला है, सड़क का नहीं।

सड़क और संसद का रिश्ता भी बड़ा दार्शनिक है। आदमी कब सड़क से संसद पहुंच जाए और कब संसद से सड़क पर लौट आए, कहा नहीं जा सकता। जनता सड़क के रास्ते ही नेताओं को संसद का पता देती है और उसी रास्ते से वापसी का न्योता भी। इसलिए सड़क है तो संभावनाएं हैं धरने की, हड़ताल की, रैली की, जाम की और कभी-कभी नंगे नाच की भी। सड़क लोकतंत्र की खुली प्रयोगशाला है।

सड़क है तो गड्ढे हैं। गड्ढे हैं तो मरम्मत है। मरम्मत है तो बजट है। बजट है तो फाइलें हैं। फाइलें हैं तो अफसर का चूल्हा जलता है। सड़क सरकार का बहुउद्देशीय औजार है। शौचालय, पेशाबघर और कचरा निस्तारण की कई योजनाओं से बचा लेती है। लोग सड़क पर ही अभ्यास कर लेते हैं, और सड़क 'राइट एट योर डोरस्टेप' कचरा सेवा दे देती है बिना टेंडर, बिना उद्घाटन।

कोरोना के दिनों में जब सड़कें सूनी हुईं, तो उन्हें भी बुरा लगा। पर जल्दी ही फैक्ट्री मालिकों ने मजदूरों को निकाला और सड़कें फिर गुलजार हो गईं। मजदूरों के रेलों ने सड़कों को धन्य कर दिया, मां की गोद फिर भर गई।

सड़कें हैं तो एक्सीडेंट हैं। ट्रैफिक पुलिस का डंडा अभियान निरंतर है। चालान से जेबें भी फुल टॉस फूल रही हैं। सड़कें हैं तो फुटपाथ हैं, और फुटपाथ हैं तो उन पर सोते लोग। वरना नशे में धुत्त रईसों को कुचलने के लिए लोग मिलेंगे कहां? सड़कें ही तो हैं जो रील और सेल्फी प्रेमियों की कर्मभूमि हैं, जहां जोखिम जितना बड़ा, व्यू उतने ज्यादा।

सड़कें हैं तो सड़कछाप गुंडे भी हैं। राजनीति की प्रारंभिक पाठशाला यही है। रेहड़ियों से शुरू हुई हफ्तावसूली आगे चलकर बड़े घोटालों का पाठ्यक्रम बनती है। सड़क कैडर तैयार करती है, छुटभैये से गैंगस्टर तक।

आजकल सड़कों पर ध्यान कम है। ध्यान दें भी तो कैसे, सड़कें बड़ी बेवफा हैं। बनाई नहीं कि उखड़ने को तैयार। इतना भी सब्र नहीं कि एक चुनावी कार्यकाल पूरा हो जाए। मरम्मत का बजट पास होते-होते नेता बदल जाता है और क्रेडिट कोई और ले जाता है। समाधान सरल है हर नेता अपने नाम की सड़क बनवाए। चुनाव हार जाए तो सड़क उठाकर घर ले जाए।

सड़कें मां जैसी ही होती हैं। पान की पीक, कचरा, मल-मूत्र सब समेट लेती हैं, बिना शिकायत। अब प्रश्न उठता है मां तो सड़क है, बाप कौन? जब भी सड़क पर वाहन चालकों के बीच बहस या हाथापाई की नौबत आती है तो पहला सवाल यही पूछा जाता है, 'सड़क तेरे बाप की है क्या?' पर बाप का पता आज तक नहीं चला। मिलते ही इसकी सूचना दी जाएगी।

कभी-कभी सड़कें उधड़ती हैं ताकि शहर को ग्रामीण जीवन की झलक मिल सके कंक्रीट, धूल, मिट्टी, जमीन से जुड़े रहने का प्रशिक्षण। चिकनी सड़क पर खेलेंगे तो बच्चों की इम्युनिटी कैसे बनेगी?

सड़कें पतित-पावनी भी हैं, मोक्षदायिनी भी। प्राचीन योगियों की परंपरा आज सड़कें निभा रही हैं। कहीं दुर्गम, कहीं अदृश्य, कहीं कीचड़, कहीं खाई। हैं भी, नहीं भी-ब्रह्मस्वरूप। फाइलों में हैं, वादों में हैं, पर चलने में अकसर नहीं। न शुरुआत दिखती है, न अंत। कोई पूछे, 'यह सड़क कहां जाती है?' भाग्यशाली हैं वे जिनकी जाती है। यहां तो सालों से देख रहे हैं नजर ही नहीं आती।

सड़कें वही हैं जहां चाहो मोड़ लो, बिना शिकायत। और अगर सरकारी बजट की हों, तो नेता जी उन्हें अपने बंगले तक भी ले जा सकते हैं। सड़कछाप सड़क बस महसूस करने की चीज है। मानने की, जानने की नहीं। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

सामाजिक बदलाव की कहानियां

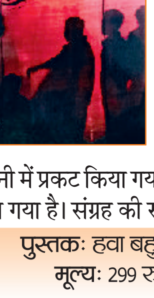

वरिष्ठ कथाकार कैलाश बनवासी का आठवां कथा संग्रह 'हवा बहुत तेज है' हाल में प्रकाशित होकर आया है। इसमें संकलित ग्यारह कहानियों में मध्य वर्गीय जीवनशैली के विभिन्न स्तरों में हाल के वर्षों में हुए बाहरी ही नहीं आंतरिक बदलावों की भी सूक्ष्म पड़ताल की गई है। शीर्षक कहानी 'हवा बहुत तेज है' के मुख्य पात्र जगन्नाथ बाबू अपने आस-पास के बदलावों, सामाजिक बहुरूपिएपन, नई पीढ़ी की सोच के बीच विस्मित नजर आते हैं तो अभूतपूर्व छल के समय में सामान्य सी ईमानदारी भी कितनी असामान्य लगती है, इसे 'एक पुराना आदमी' कहानी में प्रकट किया गया है। बाजारवाद के प्रभाव को 'दाग अच्छे हैं' कहानी में व्यक्त किया गया है। संग्रह की सभी कहानियां ठहरकर विचार करने को बाध्य करती हैं। *

पुस्तक: हवा बहुत तेज है (कहानी संग्रह), **लेखक:** कैलाश बनवासी, **मूल्य:** 299 रुपए, **प्रकाशक:** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

लघुकथा / डॉ. यशोधरा भटनागर

गूंज

दरवाजा खुलते ही रात का अंधियारा मंगलू के साथ घर में घुस आया था। कच्चे-पक्के घर में चूल्हे के गहरे स्लेटी धुएं में लालटेन की रोशनी अपना प्रकाश फैलाने के लिए जूझ रही थी।

'छुटका.. ऐ छुटका! ऐ कमली..! कितै को मर गए रे सब कै सब?' लड़खड़ाते कदमों से घर में घुसते हुए मंगलू चीखते हुए बोला।

एक तीखी गंध पूरे घर में पसर गई।

आठ बरस का दीपू कमरे की कच्ची दीवार से चिपका सहमा हुआ उसे देख रहा था।

मंगलू ने जेब से आधी भरी बोतल निकाली और जोर से चिल्लाया, 'का देख रया है बे! दौड़ कै एक गिल्लास लाओ हमाए लाने।'

कुछ पल बाद दीपू स्टील का गिलास मंगलू के हाथ में थमाते हुए बोला, 'बापू, आज स्कूल में टीचर ने पूछो हतो कि हम बड़े होकर का बनेहैं?'

मंगलू ने उसको चपतियाते हुए पूछा, 'तुमने का कहौ फिर?' दीपू थोड़ी देर चुप खड़ा रहा फिर अपनी पूरी हिम्मत बटोर कर बोला, 'बापू हमने कह दओ कि हम बड़े होकर तुमाओ जैसा नहीं बनहैं।'

'टन्न...!'

टन्न की यह जोरों की गूंज, घर की कच्ची दीवारों में समा गई।

दरअसल, मंगलू ने गिलास सामने रखे खाली कनस्तर पर दे मारा था।

मंगलू ने गुस्से से दीपू की ओर देखा, बेटे की आंखें आईने की तरह साफ थीं। इन आंखों में उसे खुद का विकृत चेहरा साफ नजर आ रहा था। *

परंपरा-संस्कृति का मोहक आयोजन
तमिलनाडु का येरकौड उत्सव

दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु अपनी संस्कृति, परंपरा और लोकपर्वों के लिए मशहूर है। राज्य पर्यटन विभाग द्वारा हर वर्ष आयोजित होने वाला येरकौड उत्सव भी इन्हीं सांस्कृतिक आयोजनों में से एक है। यहां पर्यटक विभिन्न तरह के अनुभवों का आनंद ले सकते हैं। इस उत्सव की खासियतों पर एक नजर।

सांस्कृतिक उत्सव
धीरज बसाक

दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु के सलेम जिले में स्थित एक प्रसिद्ध हिल स्टेशन है-येरकौड। समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह हिल स्टेशन, शेवरॉय पहाड़ियों पर बसा है, जहां कॉफी, मसालों, फूलों और फलों की शानदार और सघन खेती होती है। धुंध से ढंकी पहाड़ियों व झीलों के लिए मशहूर पर्वतीय नगर येरकौड सिर्फ अपनी प्राकृतिक सुंदरता और फल-फूलों की खेती के लिए ही नहीं जाना जाता बल्कि यह जनजातीय संस्कृति, लोकनृत्य, पारंपरिक संगीत और स्थानीय हस्तशिल्प का भी गढ़ है। ये सब खूबियां मिलकर इस क्षेत्र को सांस्कृतिक रूप से बेहद समृद्ध बनाती हैं। यहां की इन्हीं खूबियों को देश-दुनिया के सामने लाने के लिए हर साल येरकौड उत्सव मनाया जाता है। आमतौर पर मई महीने के अंतिम सप्ताह में मनाया जाने वाला यह रंगीन-सांस्कृतिक उत्सव इस साल 22 मई से शुरू हो चुका है और 28 मई 2026 तक आयोजित होगा।

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम: इस उत्सव की शुरुआत तमिलनाडु पर्यटन विभाग और स्थानीय प्रशासन ने मुख्यतः दो उद्देश्यों से की थी। पहला येरकौड की सांस्कृतिक पहचान और स्थानीय परंपराओं को बढ़ावा देने के लिए तथा दूसरा, पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए। धीरे-धीरे यह आयोजन केवल पर्यटकों को लुभाने वाला उत्सव ही नहीं रहा बल्कि स्थानीय लोगों की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का प्रमुख मंच बन गया। आज इस उत्सव से जुड़कर सैकड़ों कलाकारों, किसानों, जनजातीय समुदायों, हस्तशिल्पियों, लोकनर्तकों और संगीतकारों की भी न केवल पहचान बनी है बल्कि यह उनकी समृद्धि का जरिया भी बना है। सिर्फ येरकौड की स्थानीय संस्कृति ही नहीं, तमिलनाडु की सांस्कृतिक पहचान को चमकदार बनाने में भी येरकौड उत्सव ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। येरकौड का सांस्कृतिक उत्सव शेवरॉय पहाड़ियों में रहने वाली जनजातियों की सांस्कृतिक आत्मा है।

लोकनृत्यों का भी होता है आयोजन

उनके लोकनृत्य, उनकी पारंपरिक वेशभूषा, उनका स्थानीय लोकसंगीत, रीति-रिवाज, इस उत्सव के न केवल आकर्षण हैं बल्कि उन्होंने तमिलनाडु और दुनिया के दूसरे हिस्सों को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। यही कारण है कि दक्षिण भारत में बड़े पैमाने पर लोग इस मौके पर यहां आकर अपनी रोजमर्रा की भाग-दौड़ भरी जिंदगी के बीच आह्लादित करते सुकून के पल महसूस करते हैं।

परंपरा-आधुनिकता का संगम: उत्सव के दौरान यहां के स्थानीय कलाकार अपनी लोक-लुभावन वेशभूषाओं में जुलूस निकालते हैं तथा तमिल लोक-जीवन की शानदार झांकी प्रस्तुत करते हैं। यह उत्सव एक साथ न केवल यहां की सांस्कृतिक उत्सवधर्मिता को प्रस्तुत करता है बल्कि आधुनिक जीवनशैली और पारंपरिक लोक संस्कृति का एक लुभावना फ्यूजन भी प्रदर्शित करता है। इसलिए येरकौड उत्सव को स्थानीय संस्कृति के संरक्षण का महत्वपूर्ण जरिया माना जाता है, क्योंकि यह नई पीढ़ी को जितनी उत्सुकता और रोमांच के साथ आकर्षित करता है, उतनी ही तीव्रता के साथ पुरानी पीढ़ी को भी इस उत्सव के साथ जोड़ता है।

मनमोहक उत्सव की अनोखी छटा: तमिल लोकसंगीत, नादस्वरम, करगट्टम और कवड़ी की पारंपरिक धुनों तथा स्थानीय नृत्य प्रस्तुतियों से यह उत्सव अलौकिक अनुभूति प्रदान करता है। शाम ढलते ही पूरा शहर लोकधुनों और अलग-अलग जगहों पर हो रहे सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जीवंत हो उठता है। इस उत्सव में हिस्सा लेने आए सैलानी संतरे का स्वाद तथा फूलों की खुशबू का खूब लुत्फ उठाते हैं। लौटते वक्त विशेष रूप से यहां की मशहूर कॉफी और कालीमिर्च जैसे मसाले अपने साथ ले जाना नहीं भूलते हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण: येरकौड महोत्सव सिर्फ स्थानीय लोक संस्कृति का उत्सव भर नहीं है बल्कि जीवनशैली और जीवन यापन का भी संगीतमय उत्सव है। इस उत्सव में स्थानीय फलों और कृषि उत्पादों की विशेष झांकियां लगाई जाती हैं, जिससे आने वाले पर्यटकों को शुद्ध और विशिष्ट कृषि उत्पाद तो हासिल होते ही हैं, यहां के किसानों की अच्छी-खासी आय भी इस उत्सव के जरिए हो जाती है। यहां का हस्तशिल्प भी अपनी तरह की विशिष्टता के लिए जाना जाता है। विशेषकर यहां के बांस के उत्पादों को लोग खूब पसंद करते हैं। कुल मिलाकर यह प्रकृति, स्थानीय संस्कृति और सामुदायिक जीवन का साझा उत्सव है। इसमें फूलों की खुशबू के साथ लोकधुनें गूंजती हैं और पहाड़ों की ठंडी हवाओं के साथ परंपराओं की गर्माहट का आनंद भी मिलता है। *

फ्लावर शो-बोट रेसिंग का आकर्षण

येरकौड लोक उत्सव की दो और महत्वपूर्ण खासियतें हैं, जिसमें एक है फ्लावर शो और दूसरा है नौका दौड़। येरकौड उत्सव इन दोनों आयोजनों के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है। फ्लावर शो के दौरान यहां पाए जाने वाले सैकड़ों किस्म के खुशबूदार और रंग-बिरंगे फूलों की कलात्मक सजावट पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। इस उत्सव के दौरान येरकौड झील में एक बोट रेस भी आयोजित की जाती है, जो इस उत्सव का एक विशेष आकर्षण होती है। दूर-दूर से आए पर्यटक उत्सव के दौरान नौकायन का भरपूर आनंद लेते हैं।

इस तपिश में पक्षियों को देगा राहत
थोड़ा सा दाना-थोड़ा सा पानी

इन दिनों की तपती गर्मी से हम सब इंसान ही नहीं नन्हे बेजुबान पक्षी भी बेहद बेचैन हैं। दिन के समय इनके लिए दाने-पानी को खोजना बहुत कठिन हो जाता है। इन पक्षियों की बेचैनी को कम करने के लिए हम सब उनके लिए थोड़े से दाने और पानी का इंतजाम कर उनको बड़ी राहत दे सकते हैं।

सरोकार / के. पी. सिंह

तपती दोपहरी में जब धरती अंगारों की तरह दहकती है और आसमान से आग बरसती महसूस होती है, तब सबसे ज्यादा संकट, उन नन्हे परिंदों पर आता है, जिनकी चहचहाहट हमारी सुबहों को जीवंत बनाती है। पानी की कुछ बूंदें और अनाज के कुछ दाने उनके लिए जीवनदायी बन सकते हैं। इसलिए अगर हम सब इन बेचैन करने वाली गर्मी के दिनों में अपने घर की छत, बालकनी या खिड़की के बाहर बने स्पेस पर एक कटोरा पानी का भरकर रख दें और उसी जगह एक मुट्ठी दाना डाल दें तो यह नन्हे परिंदों को जिंदगी की बहुत राहत देगा। यह छोटा-सा प्रयास उनके लिए सुरक्षित ठिकाना और जिंदगी का सहारा बन सकता है।

बढ़ते ताप से पक्षी होते बेहाल: बीते कुछ दिनों से गर्मी का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है। इसके चलते हम इंसानों से भी ज्यादा शहरों की सड़कों से लेकर गांव के खुले आकाश तक पक्षियों के लिए भारी संकट पैदा हो गया है। देखने में आ रहा है कि पिछले कुछ सालों से गर्मी के दिनों में तापमान में लगातार हो रही वृद्धि, पक्षियों के प्राकृतिक जीवन चक्र को बाधित कर रहा है। पहले जहां 38 से 40 डिग्री का तापमान मई के आखिरी दिनों में हुआ करता था, वहीं अब यह अप्रैल के अंतिम सप्ताह से लेकर मई के पहले सप्ताह में होने लगा है। इन दिनों तो कई जिलों में तापमान 45 डिग्री सेंटीग्रेड को भी पार कर रहा है। जब गर्मी इतनी ज्यादा पड़ती है तो छोटे पक्षियों के लिए यह बहुत चुनौती बन जाती है। उनके लिए सुरक्षित आश्रय और दाना-पानी की जबर्दस्त किल्लत हो जाती है। पक्षियों का शरीर छोटा और बेहद संवेदनशील होता है, इससे वे तापमान में हल्के बदलाव से भी प्रभावित होते हैं। गर्मियों में जब जलस्रोत सूखने लगते हैं, तो उन्हें पानी की तलाश में दूर-दूर तक उड़ान भरनी पड़ती है। इस दौरान उनकी ऊर्जा तेजी से खत्म होती है और कई बार पानी की तलाश में ही वो हीट स्ट्रोक का शिकार हो जाते हैं।

शहरी क्षेत्रों में बड़ी समस्या: शहरी क्षेत्रों में गर्मी की स्थिति और गंभीर है। कंक्रीट के जंगलों में न तो पेड़ों की छाया बची है और न ही प्राकृतिक जलस्रोत। यही कारण है कि कबूतर, गौरैया, कौआ, मैना जैसे पक्षी भी अब पानी के लिए तरसने लगे हैं। कई रिपोर्ट्स में यह सामने आया है कि हर साल गर्मियों में उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक हजारों पक्षी सिर्फ प्यास और अत्यधिक गर्मी के कारण दम तोड़ देते हैं। तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण लगातार पेड़ कट रहे हैं। ये पेड़ केवल ऑक्सीजन ही नहीं देते बल्कि पक्षियों के लिए भोजन और आशियाना भी होते हैं। पुराने पेड़ जिनमें पक्षी पहले घोंसले बनाया करते थे, अब नहीं लगाए जा रहे हैं। सड़कों के किनारे अब इमारती लकड़ी वाले पेड़ लगाए जाते हैं, जिसका असर यह होता है कि सड़क किनारे पेड़ होने के बावजूद उसमें पक्षी अपना घोंसला नहीं बना पाते और न ही राहगीरों को उनसे कोई छाया मिलती है। यही कारण है कि शहरों में रहने वाली गौरैया और बुलबुल जैसी पक्षियों की हाल के सालों में काफी ज्यादा संख्या कम हुई है, क्योंकि पानी और आश्रय की कमी से इंसानों की तरह पक्षी भी लू का शिकार हो जाते हैं।

कर सकते हैं ये प्रयास: अत्यधिक गर्मी में नन्हे पक्षियों का शरीर, तापमान नियंत्रित नहीं कर पाता, जिससे वे गिरकर बेहोश हो जाते हैं। इसलिए, अपनी जिम्मेदारी समझते हुए, हम सबको गर्मियों में अपने घरों, अपने आंगनों, खेतों, छतों और मुंडेरों यानी जहां भी संभव हो, एक कटोरा पानी और एक मुट्ठी दाने का इंतजाम पक्षियों के लिए, जरूर करना चाहिए। इससे इनकी जान भी बचाई जा सकती है और हमें इससे नन्हे पक्षियों की जान बचाने की खुशी भी भरपूर मिलेगी। इससे कई तरह के तनाव और लाइफस्टाइल समस्याओं से हम मुक्त रहेंगे। सरकार और पर्यावरण संगठन इस संबंध में हालांकि कई तरह के प्रयास कर रहे हैं। पक्षी बचाओ जैसे अभियान लोगों को जागरूक कर रहे हैं। लेकिन यह सिर्फ सरकार और मुट्ठी भर गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों से नहीं होगा। जैसे ही गर्मियों में पारा 40 डिग्री के पार पहुंचता है, शहरी क्षेत्रों में 70 फीसदी जलस्रोत सूख जाते हैं। इसीलिए पिछले कई सालों से हर साल विशेषकर मई से लेकर जून तक देशभर में हजारों पक्षी हीट स्ट्रोक या लू से मरते पाए गए हैं। ऐसे में हम अगर अपने घर के आस-पास या कहीं भी मिट्टी के एक बर्तन में हर रोज थोड़ा पानी भरकर रख दें और उसी के आस-पास ज्वार, बाजरा और चावल जैसे कुछ दाने भी डाल दें, तो इस छोटे से प्रयास से हर साल हजारों पक्षियों की जान बचाई जा सकती है। *

सीजनल डाइट
शिखर चंद जैन

देश के विभिन्न हिस्सों में गर्मी से राहत पाने के लिए अलग-अलग तरह के ड्रिंक्स पीने-पिलाने का चलन है। ये देसी कोल्ड-ड्रिंक्स, टेस्टी ही नहीं हेल्दी भी होते हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

गर्मी में देंगे ठंडा एहसास
ये देसी कोल्ड ड्रिंक

अकसर हेल्थ एक्सपर्ट्स कार्बोनेटेड कोल्ड ड्रिंक न पीने की हिदायत देते हैं। लेकिन चिंता न करें, गर्मी और उमस से राहत पाने के लिए कई तरह के देसी ठंडे पेय आप पी सकते हैं, जो न केवल प्यास बुझाते हैं बल्कि शरीर को अंदर से ठंडा रखने में भी मदद करते हैं। दरअसल, बाजार में मिलने वाले कोल्ड ड्रिंक में अत्यधिक शुगर (चीनी), कैफीन और हानिकारक केमिकल होते हैं, जो वजन बढ़ाते हैं और डिहाइड्रेशन का कारण बन सकते हैं। इनके ज्यादा सेवन से हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं। इसके विपरीत, प्राकृतिक पोषक तत्वों से भरपूर देसी ड्रिंक्स शरीर को ताजगी देते हैं और इनका शरीर पर कोई दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता।

लस्सी

लस्सी: गर्मी के दिनों में लस्सी तो हम सब के घरों में बनती ही रहती है। इसे बनाने में न कोई झंझट है ना ज्यादा समय ही लगता है। बस अच्छी क्वालिटी के दही में चीनी मिला लें। या फिर भुना-पिसा जीरा और काला नमक मिलाकर पी लीजिए। यह शरीर को तुरंत ठंडक प्रदान करता है।

जलजीरा: जीरा, पुदीना, इमली और नीबू रस के मिश्रण से तैयार यह चटपटा पेय पाचन को सुधारता है और शरीर को ठंडा रखता है। आप चाहें तो अच्छी कंपनी का जलजीरा पावडर लाकर उसमें पुदीना, नीबू का रस मिलाकर पी सकते हैं।

आम पन्ना: इन दिनों मार्केट में कैरी (कच्चा आम) भरपूर मिल रही है। कैरी को भून कर मसल लीजिए और छान कर उस पानी में हल्की-सी चीनी, जीरा और काला नमक मिला लीजिए। यह पेय लू से बचाने में रामबाण माना जाता है।

आम पन्ना

ठंडाई: दूध, सूखे मेवे और केसर से भरपूर यह ड्रिंक विशेषकर होली के समय और गर्मियों में ताजगी के लिए पी जाती है। यह शरीर को ठंडक देने के साथ-साथ पौष्टिक भी होता है।

बेल का शरबत: पके हुए बेल के गूदे से बना यह शरबत एक बेहतरीन ठंडा पेय है और पाचन में सहायक होता है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा और मध्य प्रदेश में इसका खूब सेवन किया जाता है।

सत्तू शरबत: भुने हुए चने के आटे (सत्तू), नीबू, पानी और नमक से बना यह पेय पौष्टिक होने के साथ-साथ पेट को ठंडा और शरीर को ऊर्जावान रखता है। यह मुख्य रूप से बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्रचलित है।

सत्तू शरबत

गोंधोराज घोल: यह पश्चिम बंगाल की खास छाछ है, जिसमें सुगंधित 'गोंधोराज' नामक विशेष तरह के नीबू के रस का उपयोग किया जाता है।

नीरू मज्जिगा (नीर मोर): यह पेय मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक में पिया जाता है। यह एक ठंडी छाछ है, जिसे मसाले, करी पत्ते और अदरक मिलाकर तैयार किया जाता है।

जिगरठंडा: दूध, गोंद कतीरा और नन्नारी सिरप से बना यह पेय शरीर की गर्मी को कम करने के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। खासतौर से यह तमिलनाडु के मदुरै और उसके आस-पास के इलाकों में अधिक प्रचलित है।

पनाकम: तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में गुड़, सोंठ और इलायची से बना यह पारंपरिक पेय, त्योहारों पर विशेष रूप से बनाया जाता है और गर्मी के मौसम में राहत पाने के लिए उत्तम माना जाता है।

रागी अंबाली: कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में प्रचलित यह पेय पोषण से भरपूर और शरीर को शीतलता देने वाला होता है। यह रागी (एक प्रकार का मोटा अनाज) से बना होता है। *

रागी अंबाली

'इंडियाज बेस्ट डांसर 4' और 'नच बलिए 4' जैसे रियलिटी शोज को जज कर चुकीं करिश्मा कपूर 'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में भी बतौर जज नजर आएंगी। डांसिंग जज के रूप में वह कैसा महसूस करती हैं? इस शो के पांचवें सीजन में इस बार क्या खास है? भविष्य में एक्टिंग को लेकर उनकी क्या प्लानिंग है? ऐसे ही कई सवालों के जवाब दिए करिश्मा कपूर ने इस बातचीत में।

इंडियाज बेस्ट डांसर की जज बनकर मुझे बहुत मजा आ रहा है: करिश्मा कपूर

खास मुलाकात / आरती सक्सेना

अपने दौर की टॉप एक्ट्रेसेस में शुमार करिश्मा कपूर ने शादी के बाद कुछ समय के लिए अभिनय से संन्यास ले लिया था और वह पूरी तरह घर-परिवार की जिम्मेदारियों में व्यस्त हो गई थीं। लेकिन आज हालात अलग हैं, उनके बच्चे बड़े हो चुके हैं। एक बार फिर वे एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में एक्टिव हो गई हैं। जल्द ही करिश्मा, सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन और सोनी लिव पर प्रसारित होने वाले डांस रियलिटी शो 'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में बतौर जज नजर आएंगी। इस शो और करियर से जुड़े सवाल करिश्मा कपूर से।

आप एक बार फिर 'इंडियाज बेस्ट डांसर' सीजन 5 में बतौर जज आएंगी। इस बार इस शो में आपको किस बात ने आकर्षित किया?

इस बार इस सीजन का थीम 'इंडिया वाला डांस' है। जिसका मतलब है इंडिविजुएलिटी और सेल्फ एक्सप्रेशन, यह अपनी यूनिक शैली को अपनाने, खुद पर कॉन्फिडेंस रखने और एकदम अलग दिखने से ना डरने के बारे में है। कहने का मतलब यह है कि जब प्रतियोगी सच में अपनी कला के जरिए अपनी पहचान से जुड़ते हैं, तभी उनकी परफॉर्मेंस यादगार साबित होती है। 'इंडिया वाला डांस' की इसी सोच से इंप्रेस होकर मैं एक बार फिर इस शो से जुड़ी।

बॉलीवुड के कई सुपरहिट गानों का आप हिस्सा रही हैं। 'दिल तो पागल है' में माधुरी दीक्षित के साथ आईकॉनिक डांस, गोविंदा के साथ कई डांस नंबर्स, आज भी दर्शकों के जेहन में जिंदा हैं। ऐसे में जब इस शो में आपके डांस वाले गानों पर पार्टिसिपेंट्स परफॉर्म करते हैं तो उस समय आपका क्या रिएक्शन होता है?

'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में को-जजेज के साथ करिश्मा कपूर

(मुस्कुराते हुए) पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं। बहुत खुशी होती है जब अपने डांस नंबर पर किसी को ठुमके लगाते हुए देखती हूं। मेरी फिल्मी जर्नी में डांस का अहम हिस्सा रहा है। 'इंडियाज बेस्ट डांसर' में मेरे गाने पर किया गया हर परफॉर्मेंस मुझे उन पलों की याद दिलाता है। जब पार्टिसिपेंट्स को मैं पूरी शिद्दत के साथ अपने गानों पर डांस करते हुए देखती हूं तो मुझे बहुत खुशी होती है। उनका हार्ड वर्क और डेडिकेशन इंस्पायरिंग लगता है।

आप फिल्मी बैकग्राउंड से हैं, जहां कहानी कहने में डांस ने अहम भूमिका निभाई है। ऐसे में जजिंग पैनल में आपको डांस का कौन-सा साइड अनोखा लगता है, जिसमें आप प्रतियोगी को जज करती हैं?

मेरी पूरी लाइफ फिल्मों में बीती है। 16 साल की उम्र से मैंने एक्टिंग शुरू कर दी थी। इस दौरान मैंने हमेशा डांस को एक पॉवरफुल आस्पेक्ट के रूप में देखा है। डांस न सिर्फ फीलिंग्स को एक्सप्रेस करता है बल्कि यह कहानी कहने की भी ताकत रखता है। यह शो सिर्फ डांसिंग स्टेप्स के बारे में नहीं है, बल्कि इमोशन एक्सप्रेशन और दर्शकों से जुड़ने के बारे में भी है। मैं यही नजरिया बतौर जज लाना चाहती हूं। मैं ऐसी परफॉर्मेंस देखना चाहती हूं, जो टेक्निकली सही हो, इमोशन से भरपूर और सहज हो। ऐसी परफॉर्मेंस जो दर्शकों के दिलों पर गहरा असर छोड़े।

'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में आपके साथ गीता कपूर, जावेद जाफरी और टेरेंस लुईस भी बतौर जज आ रहे हैं। उनके साथ आपका तालमेल कैसा है?

बहुत ही अच्छा है। शो की जजिंग के अलावा भी हम आपस में मजाक मस्ती करते रहते हैं। गीता जहां मस्तीखोर है, वहीं जावेद जाफरी का सेंस ऑफ ह्यूमर बहुत अच्छा है। इन सभी जजेज के साथ शो का हिस्सा बनने का अनुभव मजेदार है।

'इंडियाज बेस्ट डांसर' देश भर के उभरते कलाकारों के लिए एक अहम प्लेटफॉर्म बन चुका है। ऐसे में जो डांसर इस शो में भाग लेना चाहते हैं, ऐसे कंटेस्टेंट्स को आप क्या मैसेज देना चाहेंगी?

उनसे मैं यही कहना चाहूंगी कि अपने ऊपर विश्वास रखें, खुद के प्रति सच्चे रहें, कुछ ना कुछ नया सीखने की कोशिश करें, चुनौतियों का सामना करें, कभी निराश ना हों और ना ही हार मानें। एक दिन आपकी मेहनत जरूर रंग लाएगी। आपका टैलेंट आपको सब में अलग और अच्छा दिखाएगा। ऐसे लोगों का इस शो में स्वागत है। ये मंच ऐसे ही लोगों के लिए बना है, जहां आकर वह अपना डांसिंग टैलेंट पेश कर सकते हैं।

क्या आपके बच्चों को भी डांस और एक्टिंग में इंटरेस्ट है?

इस बारे में अभी तो मैं कुछ कह नहीं सकती, क्योंकि मेरे दोनों ही बच्चे फिलहाल पढ़ाई कर रहे हैं। भविष्य में वे कौन-सा करियर चुनते हैं, यह अभी से कहना मुश्किल है। *

मैं फिल्मों में भी काम करने के लिए तैयार हूं बशर्ते...

टीवी शोज के अलावा फिल्मों और वेब सीरीज में एक्टिंग को लेकर क्या प्लानिंग है, इस बारे में पूछने पर करिश्मा बताती हैं, 'फिल्म हो, ओटीटी हो या टीवी, मुझे हर जगह काम करने में कोई प्रॉब्लम नहीं है। बस मैं जो भी काम करूं वह अच्छा होना चाहिए। जैसे मैंने कुछ सालों पहले 'मेंटल हुड' और 'मर्डर मुबारक' वेब सीरीज की थी। फिलहाल मैं अभिनव देव के निर्देशन में 'ब्राउन' सीरीज कर रही हूं। फिल्मों में भी काम करने के लिए मैं तैयार हूं बशर्ते उसमें मेरा रोल मीनिंगफुल और दमदार होना चाहिए।'